www.BankExamsToday.com

SSC CGL GK Digest

हिन्दी

BankExamsToday.com

Ramandeep Singh
4/18/2016

India's Best Current Affairs Android App

Contents

प्राचीनभारत 6
सिंधुघाटी सभ्यता 6
हड़प्पा संस्कृति के स्थल 6
नगर योजना 7
कृषि 7
पशुपालन 8
धर्म 8
वैदिक सभ्यता 8
बौद्ध युग 8
मौर्य साम्राज्य 10
मौर्य साम्राज्य का अंत 10
गुप्त साम्राज्य 11
गुप्त शासन की अवनति 11
मध्यकालीनभारत 11
पाल 12
सेन 12
प्रतिहार 12
राष्ट्रकूट 12
चोल राजवंश 13
भारत में मुस्लिम आक्रमण 13
दिल्ली की सल्तनत 13
गुलाम राजवंश 13
खिलजी राजवंश 14
तुगलक राजवंश 14

BankExamsToday.com

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

लोदी राजवंश 15
बुहलुल खान लोदी (1451-1489 ए. डी.) 15
सिकंदर खान लोदी (1489-1517 ए. डी.) 15
इब्राहिम खान लोदी (1489-1517 ए. डी.) 15
भक्ति आंदोलन 15
सूफीवाद 17
मुगल राजवंश 17
बाबर (1526-1530): 17
हुमायूं (1530-1540 और 1555-1556): 18
शेर शाह सूरी (1540-1545): 18
अकबर (1556-1605): 18
जहांगीर: 18
शाहजहां: 19
औरंगज़ेब: 19
सिक्ख शक्ति का उदय 19
छत्रपति शिवाजी महाराज 20
मुगल शासन काल का पतन 21
1857 में भारतीय विद्रोह 21
आधुनिकभारत 22
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947) 22
1857 में भारतीय विद्रोह 22
ईस्ट इन्डिया कम्पनी का अंत 23
राजा राम मोहन राय (1772-1833) 24
स्वामीविवेकानन्द (1863-1902) 24

BankExamsToday.com

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई एन सी) का गठन 24
जलियांवाला बाग नरसंहार 25
प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) 25
असहयोग आंदोलन 25
साइमन कमीशन 25
नागरिक अवज्ञा आंदोलन 26
भारत छोड़ो आंदोलन 26
भारत और पाकिस्तान का बंटवारा 27
भूगोल 27
मुख्य तथ्य 27
विश्व के महद्वीप 29
एशिया 29
अफ्रीका 30
उत्तरी अमेरिका 31
दक्षिण अमेरिका 31
यूरोप 32
आस्ट्रेलिया 33
मरुस्थल 33
पर्वत 34
द्वीप 34
महासागर 34
अर्थव्यवस्था 35
प्रमुख शब्दावली 35
वैधानिक तरलता अनुपात (एस.एल.आर.): 35

BankExamsToday.com

India's Best Current Affairs Android App

रेपो रेट: 35
रिवर्स रेपो रेट 35
लीड बैंक योजना :- 35
निष्पादन बजट:- 35
जीरोबेस बजट:- 35
आउटकम बजट :- 35
जेंडर बजट :- 35
प्रत्यक्ष कर :- 35
अप्रत्यक्ष कर :- 35
राजस्व घाटा :- 35
राजकोषीय घाटा 35
बॉण्ड अथवा डिबेंचर :- 36
प्रतिभूति :- 36
राजव्यवस्था 36
भारतीय संविधान सभा का गठन 37
संविधान का अंगीकरण 37
प्रारूप समिति के सदस्य 37
महवपूर्ण तथ्य 38
राज्य के नीति निर्देशक तत्व 38
भारत के सन्दर्भ में "राज्य के नीति निदेशक तत्व" का महत्व 40
भारत का राष्ट्रपति 40
राष्ट्रपति पर महाभियोग 40
राष्ट्रपति की शक्तियाँ 40
भारत का प्रधानमंत्री 41

BankExamsToday.com

India's Best Current Affairs Android App

भारत का उच्चतम न्यायालय 41
न्यायालय का गठन 41
उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति 42
न्यायाधीशों की योग्यताएँ 42
सामान्य विज्ञान 42
विटामिन 42
प्रोटीन 42
महत्वपूर्ण वैज्ञानिक यंत्र 43
कुछ महत्वपूर्ण तथ्य 45

प्राचीनभारत

BankExamsToday.com

सिंधुघाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता का विकास ताम्र पाषाण युगमें ही हुआ था, पर इसका विकास अपनी समकालीन सभ्यताओं से कहीं अधिक हुआ । इसकाल में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिम में 2500 ई.पू. से 1700 ईं पू.के बीच एक उच्च स्तरीय सभ्यता विकसित हुई जिसकी नगर नियोजन व्यवस्था बहुतउच्च कोटि की थी । लोगो को नालियों तथा सड़को के महत्व का अनुमान था । नगरके सड़क परस्पर समकोण पर काटते थे । नगर आयताकार टुकड़ो में बंट जाता था ।एक सार्वजनिक स्नानागार भी मिला है जो यहां के लोगो के धर्मानुष्ठानों मेंनहाने के लिए बनाया गया होगा । लोग आपस में तथा प्राचीन मेसोपोटामिया तथाफ़ारस से व्यापार भी करते थे ।लोगों का विश्वास प्रतिमा पूजन में था । लिंगपूजा का भी प्रचलन था पर यह निश्चित नहीं था कि यह हिन्दू संस्कृति काविकास क्रम था या उससे मिलती जुलती कोई अलग सभ्यता । कुछ विद्वान इसेद्रविड़ सभ्यता मानते हैं तो कुछ आर्य तो कुछ बाहरी जातियों की सभ्यता ।

हड़प्पा संस्कृति के स्थल

इसे हड़प्पा संस्कृति इसलिए कहा जाता है किसर्वप्रथम 1924 में आधुनिक पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के हड़प्पा नामक जगहमें इस सभ्यता का बारे में पता चला । इस परिपक्व सभ्यता के केन्द्र-स्थलपंजाब तथा सिन्ध में था । तत्पश्चात इसका विस्तार दक्षिण और पूर्व की दिशामें हुआ । इस प्रकार हड़प्पा संस्कृति के अन्तर्गत पंजाब, सिन्ध औरबलूचिस्तान के भाग ही नहीं, बल्कि गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमीउत्तर प्रदेश के सीमान्त भाग भी

India's Best Current Affairs Android App

थे। इसका फैलाव उत्तर में जम्मू से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान समुद्रतट से लेकर उत्तर पूर्व में मेरठ तक था । यह सम्पूर्ण क्षेत्र त्रिभुजाकारहै और इसका क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किलोमीटर है । इस तरह यह क्षेत्र आधुनिक पाकिस्तान से तो बड़ा है ही, प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया से भीबड़ा है । ईसा पूर्व तीसरी और दूसरी सहस्त्राब्दी में संसार भार में किसी भी सभ्यता का क्षेत्र हड़प्पा संस्कृति से बड़ा नहीं था । अब तक भारती यउप महाद्वीप में इस संस्कृति के कुल 1000 स्थलों का पता चल चुका है । इनमें से कुछ आरंभिक अवस्था के हैं तो कुछ परिपक्व अवस्था के और कुछ उत्तर वर्ती अवस्था के । परिपक्व अवस्था वाले कम जगह ही हैं । इनमें से आधे दर्जनों को ही नगर की संज्ञा दी जा सकती है । इनमें से दो नगर बहुत ही महत्वपूर्ण हैं – पंजाब का हड़प्पा तथा सिन्ध का मोहनजोदड़ो (शाब्दिक अर्थ – *प्रेतों काटीला*) । दोनो ही स्थल पाकिस्तान में हैं । दोनो एक दूसरे से 483 किमी दूर थे और सिंधु नदी द्वारा जुड़े हुए थे । तीसरा नगर मोहजोदड़ो से 130 किमी दक्षिण में चन्हुदड़ो स्थल पर था तो चौथा नगर गुजरात के खंभात की खाड़ी के उपर **लोथल** नामक स्थल पर । इसके अतिरिक्त राजस्थान के उत्तरी भाग में **कालीबंगां** (शाब्दिक अर्थ –*काले रंग की चूड़ियां*) तथा हरियाणा के हिसार जिले का बनावली । इन सभी स्थलों पर परिपक्व तथाउन्नत हड़प्पा संस्कृति के दर्शन होते हैं । सुतकागेंडोर तथा सुरकोतड़ा केसमुद्रतटीय नगरों में भी इस संस्कृति की परिपक्व अवस्था दिखाई देती है । इनदोनों की विशेषता है एक एक नगर दुर्ग का होना । उत्तर ड़प्पा अवस्था गुजरात के कठियावाड़ प्राय द्वीप में रंगपुर और रोजड़ी स्थलों पर भी पाई गईहै ।

नगर योजना

BankExamsToday.com

इस सभ्यता की सबसे विशेष बात थी यहां की विकसित नगर निर्माण योजना । हड़प्पा तथा मोहें जो दड़ो दोनो नगरों के अपने दुर्ग थे जहां शासक वर्ग का परिवार रहता था । प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर एक एक उससे निम्न स्तर का शहर था जहां ईंटों के मकानों में सामान्य लोग रहते थे । इन नगर भवनों के बारे में विशेष बात ये थी कि ये जाल की तरह विन्यस्त थे । यानि सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं और नगर अनेक आयताकार खंडों में विभक्त हो जाता था । ये बात सभी सिन्धु बस्तियों पर लागू होती थीं चाहे वे छोटी हों या बड़ी । हड़प्पा तथा मोहें जो दड़ो के भवनबड़े होते थे । वहां के स्मारक इस बात के प्रमाण हैं कि वहां के शासक मजदूर जुटाने और कर-संग्रह में परम कुशल थे । ईंटों की बड़ी-बड़ी इमारत देख कर सामान्य लोगों को भी यह लगेगा कि ये शासक कितने प्रतापी और प्रतिष्ठावान थे।

कृषि

आज के मुकाबले सिन्धु प्रदेश पूर्व में बहुत ऊपजाऊ था । ईसा-पूर्व चौथी सदी में सिकन्दर के एक इति दासकार ने कहा था कि सिन्ध इस देश के ऊपजाऊ क्षेत्रों में गिना जाता था । पूर्व काल में प्राकृतिक वनस्पति बहुत थीं जिसके कारण यहां अच्छी वर्षा होती थी । यहां के वनों से ईंटे पकाने और इमारत बनाने के लिए लकड़ी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल में लाई गई जिसके कारण धीरे धीरे वनों का विस्तार सिमटता गया । सिन्धु की उर्वरता का एक कारण सिन्धु नदी से प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ भी थी । गांव कीरक्षा के लिए खड़ी पकी ईंट की दीवार इंगित करती है बाढ़ हर साल आती थी ।यहां के लोग बाढ़ के उतर जाने के बाद नवम्बर के महीने में बाढ़ वाले मैदानों में बीज बो देते थे और अगली बाढ़ के आने से पहले अप्रील के महीने में गेँहू और जौ की फ़सल काट लेते थे । यहां कोई फावड़ा

India's Best Current Affairs Android App

या फाल तो नहीं मिला है लेकिन कालीबंगां की प्राक्-हड़प्पा सभ्यता के जो कूँट (हलरेखा) मिले हैं उनसे आभास होता है कि राजस्थान में इस काल में हल जोते जाते थे ।

पशुपालन

हड़प्पा एक कृषि प्रधान संस्कृति थी पर यहां के लोग पशुपालन भी करते थे । बैल-गाय, भैंस, बकरी, भेंड़ और सूअरपाला जाता था . यहां के लोगों को कूबड़ वाला सांड विशेष प्रिय था । कुत्ते शुरू से ही पालतू जानवरों में से एक थे । बिल्ली भी पाली जाती थी । कुत्ता और बिल्ली दोनों के पैरों के निशान मिले हैं । लोग गधे और ऊंट भी रखते थे और शायद इनपर बोझा ढोते थे । घोड़े के अस्तित्व के संकेत मोहेंजोदड़ो की एक ऊपरी सतह से तथा लोथल में मिले एक संदिग्ध मूर्तिका से मिले हैं ।हड़प्पाई लोगों को हाथी तथा गैंडे का ज्ञान था ।

धर्म

हड़प्पा में पकी मिट्टी की स्त्री मूर्ति का एंभारी संख्या में मिली हैं । एक मूर्ति में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है । विद्वानों के मत में यह पृथ्वी देवी की प्रतिमा है और इसका निकट संबंध पौधों के जन्म और वृद्धि से रहा होगा । इसलिए मालूम होताहै कि यहां के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और इसकी पूजा उसी तरह करते थे जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसिस् की । लेकिन प्राचीन मिस्र की तरह यहां का समाज भी मातृ प्रधान था कि नहीं यह कहना मुश्किल है ।कुछ वैदिक सूक्तों में पृथ्वी माता की स्तुति है, किन्तु उनकों कोई प्रमुखता नहीं दी गई है । कालान्तर में ही हिन्दू धर्म में मातृ देवी कोउच्च स्थान मिला है । ईसा की छठी सदी और उसके बाद से ही दुर्गा, अम्बा, चंडी आदि देवियों को आराध्य देवियों का स्थान मिला ।

BankExamsToday.com

वैदिक सभ्यता

प्राचीन भारत के इतिहास में वैदिक सभ्यता सबसे प्रारंभिक सभ्यता है जिसका संबंध आर्यों के आगमन से है। इसका नामकरण हिन्दुओं के प्रारम्भिक साहित्य वेदों के नाम पर किया गया है। वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के किनारे के क्षेत्र जिसमें आधुनिक भारत के पंजाब और हरियाणा राज्य आते हैं, में विकसित हुई। वैदिक आर्यों और हिन्दुओं का पर्यायवाची है, यह वेदों से निकले धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों का दूसरा नाम है। बड़े पैमाने पर स्वीकार दृष्टिकोणों के अनुसार आर्यों का एक वर्ग भारतीय उप महाद्वीप की सीमाओं पर ईसा पूर्व 2000 के आस पास पहुंचा और पहले पंजाब में बस गया, और यही ऋगवेद के स्त्रोतों की रचना की गई।

आर्य जन जन जातियों में रहते थे और संस्कृत भाषा का उपयोग करते थे, जो भाषाओं के भारतीय - यूरोपीय समूह के थे। क्रमश: आर्य स्थानीय लोगों के साथमिल जुल गए और आर्य जन जातियों तथा मूल अधिवासियों के बीच एक ऐतिहासिक संश्लेषण हुआ। यह संश्लेषण आगे चलकर हिन्दुत्व कहलाया। इस अवधि के दो महान ग्रंथ रामायण और महाभारत थे।

बौद्ध युग

भगवान गौतम बुद्ध के जीवन काल में, ईसा पूर्व 7 वीं और शुरूआती 6 वीं शताब्दि के दौरान सोलह बड़ी शक्तियां (महाजनपद) विद्यमान थे। अति महत्वपूर्ण गणराज्यों में कपिलवस्तु के शाक्य और वैशाली के लिच्छवी गणराज्य

India's Best Current Affairs Android App

थे। गणराज्यों के अलावा राजतंत्रीय राज्य भी थे, जिनमें सेकौ शाम्बी (वत्स), मगध, कोशल, और अवन्ति महत्वपूर्ण थे। इन राज्यों काशासन ऐसे शक्तिशाली व्यक्तियों के पास था, जिन्होंने राज्य विस्तार और पड़ोसी राज्यों को अपने में मिलाने की नीति अपना रखी थी। तथा पिगण राज्यात्मक राज्यों के तब भी स्पष्ट संकेत थे जब राजाओं के अधीन राज्यों का विस्तार हो रहा था।

बुद्ध का जन्म ईसा पूर्व 560 में हुआ और उनका देहान्त ईसा पूर्व 480 में 80 वर्ष की आयु में हुआ। उनका जन्म स्थान नेपाल में हिमालय पर्वतश्रंखला के पलपा गिरि की तलहटी में बसे कपिल वस्तु नगर का लुम्बिनी नामक निकुंज था। बुद्ध, जिनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ गौतम था, ने बुद्ध धर्मकी स्थापना की जो पूर्वी एशिया के अधिकांश हिस्सों में एक महान संस्कृतिके रूप में विकसित हुआ।

बौद्ध संघ की स्थापना : बुद्ध के धर्म प्रचार से भिक्षुओं की संख्या बढ़नेलगी। बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी उनके शिष्य बनने लगे। शुद्धोदन और राहुल नेभी बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। जब भिक्षुओं की संख्या बढ़ने लगी तो बौद्धसंघ की स्थापना की गई। बाद में लोगों के आग्रह पर बुद्ध ने स्त्रियों को भीसंघ में ले लेने के लिए अनुमति दे दी, यद्यपि इसे उन्होंने विशेष अच्छा नहीं माना।

आनन्द : ये बुद्ध और देवदत्त के भाई थे और बुद्ध के दस सर्वश्रेष्ठ शिष्यों में से एक हैं। ये लगातार बीस वर्षों तक बुद्ध की संगत में रहे। इन्हें गुरु का सर्वप्रिय शिष्य माना जाता था। आनंद को बुद्ध के निर्वाण के पश्चात प्रबोधन प्राप्त हुआ। वे अपनी स्मरण शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।

BankExamsToday.com

महाकश्यप : महाकश्यप मगध के ब्राह्मण थे, जो तथागत के नजदीकी शिष्य बन गए थे। इन्होंने प्रथम बौद्ध अधिवेशन की अध्यक्षता की थी।

रानी खेमा : रानी खेमा सिद्ध धर्मसंघिनी थीं। ये बीम बिसारा की रानी थीं और अति सुंदर थीं। आगे चलकर खेमा बौद्ध धर्म की अच्छी शिक्षिका बनीं।

सम्राट अशोक : सम्राट अशोक बौद्ध धर्म के अनुयायी और अखंड भारत के पहले सम्राट थे। इन्होंने ईसा पूर्व 207 ईस्वी में मौर्य वंश की शुरुआत की। अशोक ने कई वर्षों की लड़ाई के बाद बौद्ध धर्म अपनाया था। इसके बाद उन्होंने युद्ध का बहिष्कार किया और शिकार करने पर पाबंदी लगाई। बौद्ध धर्म का तीसरा अधिवेशन अशोक के राज्यकाल के 17वें साल में संपन्न हुआ।

बौद्ध धर्म के अनुसार आर्य सत्य चार हैं :

(1) दुःख

(2) दुःख-समुदाय

(3) दुःख-निरोध

India's Best Current Affairs Android App

(4) दुःखनिरोध-गामिनी

मौर्य साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य की अवधि (ईसा पूर्व 322 से ईसा पूर्व 185 तक) नेभारतीय इतिहास में एक युग का सूत्रपात किया। कहा जाता है कि यह वह अवधि थीजब कालक्रम स्पष्ट हुआ। यह वह समय था जब, राजनीति, कला, और वाणिज्य ने भारत को एक स्वर्णिम ऊंचाई पर पहुंचा दिया। यह खंडों में विभाजित राज्यों के एकीकरण का समय था। इससे भी आगे इस अवधि के दौरान बाहरी दुनिया के साथ प्रभावशाली ढंग से भारत के संपर्क स्थापित हुए।

सिकन्दर की मृत्यु के बाद उत्पन्न भ्रम की स्थिति ने राज्यों को यूनानियों की दासता से मुक्त कराने और इस प्रकार पंजाब व सिंध प्रांतों पर कब्जा करने का चन्द्रगुप्त को अवसर प्रदान किया। उसने बाद में कौटिल्यकी सहायता से मगध में नन्द के राज्य को समाप्त कर दिया और ईसा पूर्व और 322 में प्रतापी मौर्य राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त जिसने 324 से 301 ईसा पूर्व तक शासन किया, ने मुक्ति दाता की उपाधि प्राप्त की व भारतके पहले सम्राट की उपाधि प्राप्त की।

वृद्धावस्था आने पर चन्द्रगुप्त की रुचि धर्म की ओर हुई तथा ईसापूर्व 301 में उसने अपनी गद्दी अपने पुत्र बिंदुसार के लिए छोड़ दी। अपने 28 वर्ष के शासनकाल में बिंदुसार ने दक्षिण के ऊचांई वाले क्षेत्रों परविजय प्राप्त की तथा 273 ईसा पूर्व में अपनी राजगद्दी अपने पुत्र अशोक को सौंप दी। अशोक न केवल मौर्य साम्राज्य का अत्यधिक प्रसिद्ध सम्राट हुआ, परन्तु उसे भारत व विश्व के महानतम सम्राटों में से एक माना जाता है।

BankExamsToday.com

उसका साम्राज्य हिन्दु कुश से बंगाल तक के पूर्वी भू भाग में फैला हुआथा व अफगानिस्तान, बलूचिस्तान व पूरे भारत में फैला हुआ था, केवल सुदूरदक्षिण का कुछ क्षेत्र छूटा था। नेपाल की घाटी व कश्मीर भी उसके साम्राज्य में शामिल थे।

अशोक के साम्राज्य की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी कलिंग विजय (आधुनिकओडिशा), जो उसके जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाने वाली साबित हुई। कलिंग युद्ध में भयानक नरसंहार व विनाश हुआ। युद्ध भूमि के कष्टों व अत्याचारों ने अशोक के हृदय को विदीर्ण कर दिया। उसने भविष्य में और कोई युद्ध न करने का प्रण कर लिया। उसने सांसरिक विजय के अत्याचारों तथा सदाचार व आध्यात्मिकता की सफलता को समझा। वह बुद्ध के उपदेशों के प्रति आकर्षित हुआतथा उसने अपने जीवन को, मनुष्य के हृदय को कर्तव्य परायणता व धर्म परायणता से जीतने में लगा दिया।

मौर्य साम्राज्य का अंत

अशोक के उत्तराधिकारी कमज़ोर शासक हुए, जिससे प्रान्तों को अपनी स्वतंत्रता का दावा करने का साहस हुआ। इतने बड़े साम्राज्य का प्रशासन चलाने के कठिन कार्य का संपादन कमज़ोर शासकों द्वारा नहीं हो सका।उत्तराधिकारियों के बीच आपसी लड़ाइयों ने भी मौर्य साम्राज्य के अवनति में योगदान किया।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

ईसवी सन् की प्रथम शताब्दि के प्रारम्भ में कुशाणों ने भारत के उत्तर पश्चिम मोर्चे में अपना साम्राज्य स्थापित किया। कुशाण सम्राटों मेंसबसे अधिक प्रसिद्ध सम्राट कनिष्क (125 ई. से 162 ई. तक), जो कि कुशाण साम्राज्य का तीसरा सम्राट था। कुशाण शासन ईस्वी की तीसरी शताब्दि के मध्य तक चला। इस साम्राज्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ कला के गांधार घराने का विकास व बुद्ध मत का आगे एशिया के सुदूर क्षेत्रों में विस्तारकरना रही।

गुप्त साम्राज्य

कुशाणों के बाद गुप्त साम्राज्य अति महत्वपूर्ण साम्राज्य था। गुप्त अवधि को भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है। गुप्त साम्राज्य का पहला प्रसिद्ध सम्राट घटोत्कच का पुत्र चन्द्रगुप्त था।उसने कुमार देवी से विवाह किया जो कि लिच्छिवियों के प्रमुख की पुत्री थी।चन्द्रगुप्त के जीवन में यह विवाह परिवर्तन लाने वाला था। उसे लिच्छिवियों से पाटलीपुत्र दहेज में प्राप्त हुआ। पाटलीपुत्र से उसने अपने साम्राज्य की आधार शिला रखी व लिच्छिवियों की मदद से बहुत से पड़ोसी राज्यों को जीतना शुरू कर दिया। उसने मगध (बिहार), प्रयाग व साकेत (पूर्वीउत्तर प्रदेश) पर शासन किया। उसका साम्राज्य गंगा नदी से इलाहाबाद तकफैला हुआ था। चन्द्रगुप्त को महाराजा धिराज की उपाधि से विभूषित किया गयाथा और उसने लगभग पन्द्रह वर्ष तक शासन किया।

चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी 330 ई0 में समुन्द्रगुप्त हुआ जिसने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया। वह बहुत प्रतिभा सम्पन्न योद्धा था और बताया जाता है कि उसने पूरे दक्षिण में सैन्य अभियान का नेतृत्व किया तथा विन्ध्य क्षेत्र के बनवासी कबीलों को परास्त किया।

BankExamsToday.com

समुन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त हुआ, जिसे विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है। उसने मालवा, गुजरात व काठिया वाड़के बड़े भूभागों पर विजय प्राप्त की। इससे उन्हे असाधारण धन प्राप्त हुआ और इससे गुप्त राज्य की समृद्धि में वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान गुप्त राजाओं ने पश्चिमी देशों के साथ समुद्री व्यापार प्रारम्भ किया।बहुत संभव है कि उसके शासन काल में संस्कृत के महानतम कवि व नाटककार कालीदास व बहुत से दूसरे वैज्ञानिक व विद्वान फले-फूले।

गुप्त शासन की अवनति

ईसा की 5वीं शताब्दि के अन्त व छठवीं शताब्दि में उत्तरी भारत मेंगुप्त शासन की अवनति से बहुत छोटे स्वतंत्र राज्यों में वृद्धि हुई वविदेशी हूणों के आक्रमणों को भी आकर्षित किया। हूणों का नेता तोरा मोरा था।वह गुप्त साम्राज्य के बड़े हिस्सों को हड़पने में सफल रहा। उसका पुत्र मिहिराकुल बहुत निर्दय व बर्बर तथा सबसे बुरा ज्ञात तानाशाह था। दो स्थानीय शक्तिशाली राजकुमारों मालवा के यशोधर्मन और मगध के बालादित्य ने उसकी शक्ति को कुचला तथा भारत में उसके साम्राज्य को समाप्त किया।

मध्यकालीनभारत

GK DIGEST UPDATED DAILY

India's Best Current Affairs Android App

आने वाला समय जो इस्लामिक प्रभाव और भारत पर शासन के साथ सशक्त रूप से संबंध रखता है, मध्य कालीन भारतीय इतिहास तथाकथित स्वदेशी शासकों के अधीन लगभग तीन शताब्दियों तक चलता रहा, जिसमें चालुक्य, पल्व, पाण्डया, राष्ट्रकूट शामिल हैं, मुस्लिम शासक और अंतत: मुगल साम्राज्य। नौवी शताब्दी के मध्य में उभरने वाला सबसे महत्वपूर्ण राजवंश चोल राजवंश था।

पाल

आठवीं और दसवीं शताब्दी ए.डी. के बीच अनेक शक्तिशाली शासकों ने भारत के पूर्वी और उत्तरी भागों पर प्रभुत्व बनाए रखा। पाल राजा धर्मपाल, जोगोपाल के पुत्र थे, में आठवीं शताब्दी ए.डी. से नौवी शताब्दी ए.डी. के अंत तक शासन किया। धर्मपाल द्वारा नालंदा विश्व विद्यालय और विक्रम शिलाविश्व विद्यालय की स्थापना इसी अवधि में की गई।

सेन

पाल वंश के पतन के बाद सेन राजवंश ने बंगाल में शासन स्थापित किया। इस राजवंश के स्थापक सामंत सेन थे। इस राजवंश के महानतम शासक विजय सेन थे। उन्होंने पूरे बंगाल पर कब्जा किया और उनके बाद उनके पुत्र बल्लाल सेन ने राज किया। उनका शासन शांति पूर्ण रहा किन्तु इसने अपने विचार धाराओं को समूचा बनाए रखा। वे एक महान विद्वान थे तथा उन्होंने ज्योतिष विज्ञान पर एक पुस्तक सहित चार पुस्तके लिखी। इस राजवंश के अंतिम शासक लक्ष्मण सेनथे, जिनके कार्यकाल में मुस्लिमों ने बंगाल पर शासन किया और फिर साम्राज्य समाप्त हो गया।

BankExamsToday.com

प्रतिहार

प्रतिहार राजवंश के महानतम शासक मिहिर भोज थे। उन्होंने 836 में कन्नौज (कान्यकुब्ज) की खोज की और लगभग एक शताब्दी तक प्रतिहारों की राजधानी बनाया। उन्होंने भोजपाल (वर्तमान भोपाल) शहर का निर्माण किया। राजा भोज और उनके अन्य सहवर्ती गुजर राजाओं को पश्चिम की ओर से अरब जनों के अनेक आक्रमणों का सामना करना पड़ा और पराजित होना पड़ा।

वर्ष 915 - 918 ए.डी. के बीच कन्नौज पर राष्ट्रकूट राजा ने आक्रमण किया। जिसने शहर को विरान बना दिया और प्रतिहार साम्राज्य की जड़ें कमजोर दी। वर्ष 1018 में कन्नौज ने राज्यपाल प्रतिहार का शासन देखा, जिसे गजनी के महमूद ने लूटा। पूरा साम्राज्य स्वतंत्रता राजपूत राज्यों में टूट गया।

राष्ट्रकूट

इस राजवंश ने कर्नाटक पर राज्य किया और यह कई कारणों से उल्लेखनीय है। उन्होंने किसी अन्य राजवंश की तुलना में एक बड़े हिस्से पर राज किया। वे कला और साहित्व के महान संरक्षक थे। अनेक राष्टकूट राजाओं

India's Best Current Affairs Android App

द्वाराशिक्षा और साहित्य को दिया गया प्रोत्साहन अनोखा है और उनके द्वारा धार्मिक सहनशीलता का उदाहरण अनुकरणीय है।

चोल राजवंश

यह भारतीय महाद्वीप के एक बड़े हिस्से को शामिल करते हुए नौवीं शताब्दी ए.डी. के मध्य में उभरा साथ ही यह श्रीलंका तथा मालदीव में भी फैला था।

इस राजवंश से उभरने वाला प्रथम महत्वपूर्ण शासक राजराजा चोल 1 और उनके पुत्र तथा उत्तरवर्ती राजेन्द्र चोल थे। राज राजा ने अपने पिता की जोड़ नेकी नीति को आगे बढ़ाया। उसने बंगाल, ओडिशा और मध्य प्रदेश के दूर दराज के इलाकों पर सशस्त्र चढ़ाई की।

राजेन्द्र I, राजा धिराज और राजेन्द्र II के उत्तरवर्ती निडर शासक थे जो चालुक्य राजाओं से आगे चलकर वीरता पूर्वक लड़े किन्तु चोल राजवंश के पतन को रोक नहीं पाए। आगे चलकर चोल राजा कमजोर और अक्षम शासक सिद्ध हुए। इस प्रकार चोल साम्राज्य आगे लगभग डेढ़ शताब्दी तक आगे चला और अंततः चौदहवीं शताब्दी ए.डी. की शुरूआत में मलिक कफूर के आक्रमण पर समाप्त हो गया।

भारत में मुस्लिम आक्रमण

BankExamsToday.com

मोहम्मद गोरी ने मुल्तान और पंजाब पर विजय पाने के बाद 1175 ए.डी. में भारत पर आक्रमण किया, वह दिल्ली की ओर आगे बढ़ा। उत्तरी भारत के बहादुर राजपूत राजाओं ने पृथ्वी राज चौहान के नेतृत्व में 1191 ए.डी. में तरा इनके प्रथम युद्ध में पराजित किया। एक साल चले युद्ध के पश्चात मोहम्मद गोरी अपनी पराजय का बदला लेने दोबारा आया। वर्ष 1192 ए.डी. के दौरान तरा इनमें एक अत्यंत भयानक युद्ध लड़ा गया, जिसमें राजपूत पराजित हुए और पृथ्वीराज चौहान को पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया गया। तराइन का दूसरा युद्ध एक निर्णायक युद्ध सिद्ध हुआ और इसमें उत्तरी भारत में मुस्लिम शासन की आधार शिला रखी।

दिल्ली की सल्तनत

भारत के इतिहास में 1206 ए.डी. और 1526 ए.डी. के बीच की अवधि दिल्ली का सल्तनत कार्यकाल कही जाती है। इस अवधि के दौरान 300 वर्षों से अधिक समय में दिल्ली पर पांच राज वंशों ने शासन किया। ये थे गुलाम राजवंश (1206-90), खिलजी राजवंश (1290-1320), तुगलक राजवंश (1320-1413), सायीद राजवंश (1414-51), और लोदी राजवंश (1451-1526)।

गुलाम राजवंश

इस्लाम में समानता की संकल्पना और मुस्लिम परम्पराएं दक्षिण एशिया के इतिहास में अपने चरम बिन्दु पर पहुंच गई, जब गुलामों ने सुल्तान का दर्जा हासिल किया। गुलाम राजवंश ने लगभग 84 वर्षों तक इस उप महाद्वीप पर शासन किया। यह प्रथम मुस्लिम राजवंश था जिसने भारत पर शासन किया। मोहम्मद गोरी का एक गुलाम कुतुब

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

उद दीन ऐबक अपने मालिक की मृत्यु के बाद शासक बना और गुलाम राजवंश की स्थापना की। वह एक महान निर्माता था जिसने दिल्ली में कुतुब मीनार के नाम से विख्यात आश्चर्य जनक 238 फीट ऊंचे पत्थर के स्तंभ का निर्माण कराया।

गुलाम राजवंश का अगला महत्वपूर्ण राजा शम्स उद दीन इलतुतमश था, जो कुतुब उद दीन ऐबक का गुलाम था। इलतुतमश ने 1211 से 1236 के बीच लगभग 26 वर्ष तक राज किया और वह मजबूत आधार पर दिल्ली की सल्तनत स्थापित करने के लिए उत्तरदायी था। इलतुतमश की सक्षम बेटी, रजिया बेगम अपनी और अंतिम मुस्लिम महिला थी जिसने दिल्ली के तख्त पर राज किया। वह बहादुरी से लड़ी किन्तु अंत में पराजित होने पर उसे मार डाला गया।

अंत में इलतुतमश के सबसे छोटे बेटे नसीर उद दीन मेहमूद को 1245 में सुल्तान बनाया गया। जब कि मेहमूद ने लगभग 20 वर्ष तक भारत पर शासन किया। किन्तु अपने पूरे कार्य काल में उसकी मुख्य शक्ति उसके प्रधानमंत्री बल बनके हाथों में रही। मेहमूद की मौत होने पर बलबन ने सिंहासन पर कब्ज़ा किया और दिल्ली पर राज किया। वर्ष 1266 से 1287 तक बलबन ने अपने कार्य काल में साम्राज्य का प्रशासनिक ढांचा सुगठित किया तथा इलतुतमश द्वारा शुरू किए गए कार्यों को पूरा किया।

खिलजी राजवंश

बलवन की मौत के बाद सल्तनत कमजोर हो गई और यहां कई बगावतें हुईं। यही वह समय था जब राजाओं ने जलाल उद दीन खिलजी को राज गद्दी पर बिठाया। इससे खिलजी राजवंश की स्थापना आरंभ हुई। इस राजवंश का राजकाज 1290 ए.डी. में शुरू हुआ। अला उद दीन खिलजी जो जलाल उद दीन खिलजी का भतीजा था, ने षड़यंत्र किया और सुल्तान जलाल उद दीन को मार कर 1296 में स्वयं सुल्तान बन बैठा। अला उद दीन खिलजी प्रथम मुस्लिम शासक था जिसके राज्य ने पूरे भार तका लगभग सारा हिस्सा दक्षिण के सिरे तक शामिल था। उसने कई लड़ाइयां लड़ी, गुजरात, रणथम्भौर, चित्तौड़, मलवा और दक्षिण पर विजय पाई। उसके 20 वर्ष के शासन काल में कई बार मंगोलों ने देश पर आक्रमण किया किन्तु उन्हें सफलता पूर्वक पीछे खदेड़ दिया गया। इन आक्रमणों से अला उद दीन खिलजी नेस्वयं को तैयार रखने का सबक लिया और अपनी सशस्त्र सेनाओं को संपुष्ट तथा संगठित किया। वर्ष 1316 ए.डी. में अला उद दीन की मौत हो गई और उसकी मौत के साथ खिलजी राजवंश समाप्त हो गया।

BankExamsToday.com

तुगलक राजवंश

गया सुद्दीन तुगलक, जो अला उद दीन खिलजी के कार्य काल में पंजाब का राज्यपाल था, 1320 ए.डी. में सिंहासन पर बैठा और तुगलक राजवंश की स्थापना की। उसने वारंगल पर विजय पाई और बंगाल में बगावत की। मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने पिता का स्थान लिया और अपने राज्य को भारत से आगे मध्य एशिया तक आगे बढ़ाया। मंगोल ने तुगलक के शासन काल में भारत पर आक्रमण किया और उन्हें भी इस बार हराया गया।

मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी को दक्षिण में सबसे पहले दिल्ली से हटाकर देवगिरी में स्थापित किया। जबकि इसे दो वर्ष में वापस लाया गया।उसने एक बड़े साम्राज्य को विरासत में पाया था किन्तु वह कई प्रांतों को

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

अपने नियंत्रण में नहीं रख सका, विशेष रूप से दक्षिण और बंगाल को। उसकी मौत 1351 ए.डी. में हुई और उसके चचेरे भाई फिरोज़ तुगलक ने उसका स्थान लिया।

फिरोज तुगलक ने साम्राज्य की सीमाएं आगे बढ़ाने में बहुत अधिक योग दान नहीं दिया, जो उसे विरासत में मिली थी। उसने अपनी शक्ति का अधिकांश भाग लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में लगाया। वर्ष 1338 ने उसकी मौत के बाद तुगलक राजवंश लगभग समाप्त हो गया। यद्यपि तुगलक शासन 1412 तक चलता रहा फिरभी 1398 में तैमूर द्वारा दिल्ली पर आक्रमण को तुगलक साम्राज्य का अंत कहा जा सकता है।

लोदी राजवंश

बुहलुल खान लोदी (1451-1489 ए. डी.)

वे लोदी राजवंश के प्रथम राजा और संस्थापक थे। दिल्ली की सलतनत को उनकी पुरानी भव्यता में वापस लाने के लिए विचार से उन्होंने जौनपुर केशक्तिशाली राजवंश के साथ अनेक क्षेत्रों पर विजय पाई। बुहलुल खान नेग्वालियर, जौनपुर और उत्तर प्रदेश में अपना क्षेत्र विस्तारित किया।

सिकंदर खान लोदी (1489-1517 ए. डी.)

बुहलुल खान की मृत्यु के बाद उनके दूसरे पुत्र निज़ाम शाह राजा घोषित किए गए और 1489 में उन्हें सुल्तान सिकंदर शाह का खिताब दिया गया।उन्होंने अपने राज्य को मजबूत बनाने के सभी प्रयास किए और अपना राज्य पंजाब से बिहार तक विस्तारित किया। वे बहुत अच्छे प्रशासक और कलाओं तथा लिपि के संरक्षक थे। उनकी मृत्यु 1517 ए.डी. में हुई।

BankExamsToday.com

इब्राहिम खान लोदी (1489-1517 ए. डी.)

सिकंदर की मृत्यु के बाद उनके पुत्र इब्राहिम को गद्दी पर बिठाया गया। इब्राहिम लोदी एक सक्षम शासक सिद्ध नहीं हुए। वे राजाओं के साथ अधिक से अधिक सख्त होते गए। वे उनका अपमान करते थे और इस प्रकार इन अपमानों का बदला लेने के लिए दौलतखान लोदी, लाहौर के राज्यपाल और सुल्तान इब्राहिमलोदी के एक चाचा, अलाम खान ने काबुल के शासक, बाबर को भारत पर कब्ज़ा करनेका आमंत्रण दिया। इब्राहिम लोदी को बाबर की सेना ने 1526 ए. डी. में पानीपत के युद्ध में मार गिराया। इस प्रकार दिल्ली की सल्तनत अंतत:समाप्त हो गई और भारत में मुगल शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भक्ति आंदोलन

मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव थासामाजिक - धार्मिक सुधारकों की धारा द्वारा समाज में लाई गई मौन क्रांति, एक ऐसी क्रांति जिसे भक्ति अभियान के नाम से जाना जाता है। यह अभियान हिन्दुओं, मुस्लिमों और सिक्खों द्वारा भारतीय उप महाद्वीप में भगवान की पूजा के साथ जुड़े रीति रिवाजों के लिए उत्तरदायी था। उदाहरण के लिए, हिन्दू मंदिरों में कीर्तन, दरगाह में कव्वाली (मुस्लिमों द्वारा) और गुरुद्वारे में

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

गुरबानी का गायन, ये सभी मध्यकालीन इतिहास में (800 - 1700) भारतीय भक्ति आंदोलन से उत्पन्न हुए हैं। इस हिन्दू क्रांतिकारी अभियान के नेता थे शंकराचार्य, जो एक महान विचारक और जाने माने दार्शनिक रहे। इस अभियान को चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक मुखरता प्रदान की। इस अभियान की प्रमुख उपलब्धि मूर्ति पूजा को समाप्त करना रहा।

भक्ति आंदोलन के नेता रामानंद ने राम को भगवान के रूप में लेकर इसे केन्द्रित किया। उनके बारे में बहुत कम जानकारी है, परन्तु ऐसा माना जाताहै कि वे 15वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में रहे। उन्होंने सिखाया कि भगवान राम सर्वोच्च भगवान हैं और केवल उनके प्रति प्रेम और समर्पण के माध्यम से तथा उनके पवित्र नाम को बार - बार उच्चारित करने से ही मुक्ति पाई जातीहै।

चैतन्य महाप्रमु एक पवित्र हिन्दू भिक्षु और सामाजिक सुधार थे तथा वे सोलहवीं शताब्दी के दौरान बंगाल में हुए। भगवान के प्रति प्रेम भाव रखने के प्रबल समर्थक, भक्ति योग के प्रवर्तक, चैतन्य ने ईश्वर की आराधना श्रीकृष्ण के रूप में की।

श्री रामनुज आचार्य भारतीय दर्शन शास्त्री थे और उन्हें सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैष्णव संत के रूप में मान्यता दी गई है। रामानंद ने उत्तर भारत में जो किया वही रामानुज ने दक्षिण भारत में किया। उन्होंने रुढिवादी कुविचार की बढ़ती औपचारिकता के विरुद्ध आवाज उठाई और प्रेम तथा समर्पण कीनींव पर आधारित वैष्णव विचाराधारा के नए सम्प्रदायक की स्थापना की। उनका सर्वाधिक असाधारण योगदान अपने मानने वालों के बीच जाति के भेदभाव को समाप् करना।

BankExamsToday.com

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के अनुयायियों में भगत नामदेव और संत कबीर दास शामिल हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भगवान की स्तुति के भक्ति गीतों पर बल दिया।

प्रथम सिक्ख गुरु, और सिक्ख धर्म के प्रवर्तक, गुरु नामक जी भी निर्गुण भक्ति संत थे और समाज सुधारक थे। उन्होंने सभी प्रकार के जाति भेद और धार्मिक शत्रुता तथा रीति रिवाजों का विरोध किया। उन्होंने ईश्वर के एक रूप माना तथा हिन्दू और मुस्लिम धर्म की औपचारिकताओं तथा रीति रिवाजों की आलोचना की। गुरु नामक का सिद्धांत सभी लोगों के लिए था। उन्होंने हर प्रकार से समानता का समर्थन किया।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में भी अनेक धार्मिक सुधारकों का उत्थान हुआ। वैष्णव सम्प्रदाय के राम के अनुयायी तथा कृष्ण के अनुयायी अनेक छोटे वर्गों और पंथों में बंट गए। राम के अनुयायियों में प्रमुख संत कवि तुलसीदास थे। वे अत्यंत विद्वान थे और उन्होंने भारतीय दर्शन तथा साहित्य का गहरा अध्ययन किया। उनकी महान कृति 'राम चरित मानस' जिसे जन साधारण द्वारा तुलसी कृत रामायण कहा जाता है, हिन्दू श्रृद्धालुओं के बीच अत्यंत लोक प्रिय है। उन्होंने लोगों के बीच श्री राम की छवि सर्वव्यापी, सर्व शक्तिमान, दुनिया के स्वामी और परब्रह्म के साकार रूप से बनाई।

कृष्ण के अनुयायियों ने 1585 ए. डी में हरिवंश के अंतर्गत राधा बल्लभीपंथ की स्थापना की। सूर दास ने ब्रज भाषा में "सूर सरागर" की रचना की, जो श्री कृष्ण के मोहक रूप तथा उनकी प्रेमिका राधा की कथाओं से परि पूर्ण है।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

सूफीवाद

पद सूफी, वली, दरवेश और फकीर का उपयोग मुस्लिम संतों के लिए किया जाता है, जिन्हों ने अपनी पूर्वा भासी शक्तियों के विकास हेतु वैराग्य अपनाकर, सम्पूर्णता की ओर जाकर, त्याग और आत्म अस्वीकार के माध्यम से प्रयास किया। बारहवीं शताब्दी ए.डी. तक, सूफीवाद इस्लामी सामाजिक जीवन के एक सार्व भौमिक पक्ष का प्रतीक बन गया, क्योंकि यह पूरे इस्लामिक समुदाय में अपना प्रभाव विस्तारित कर चुका था।

सूफीवाद इस्लाम धर्म के अंदरुनी या गूढ़ पक्ष को या मुस्लिम धर्म के रहस्यमयी आयाम का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि, सूफी संतों ने सभी धार्मिक और सामुदायिक भेदभावों से आगे बढ़कर विशाल पर मानवता के हित को प्रोत्साहन देने के लिए कार्य किया। सूफी सन्त दार्शनिकों का एक ऐसा वर्गथा जो अपनी धार्मिक विचार धारा के लिए उल्लेख नीय रहा। सूफियों ने ईश्वरको सर्वोच्च सुंदर माना है और ऐसा माना जाता है कि सभी को इसकी प्रशंसा करनी चाहिए, उसकी याद में खुशी महसूस करनी चाहिए और केवल उसी पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने विश्वास किया कि ईश्वर "माशूक" और सूफी "आशिक" हैं।

सूफीवाद ने स्वयं को विभिन्न 'सिलसिलों' या क्रमों में बांटा। सर्वाधिक चार लोक प्रिय वर्ग हैं चिश्ती, सुहारावार्डिस, कादि रियाह और नक्शबंदी।

सूफीवाद ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जडें जमा लीं और जन समूह परगहरा सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला। इसने हर प्रकार के धार्मिक औपचारिक वाद, रुढिवादिता, आडंबर और पाखंड के विरुद्ध आवाज़ उठाई तथा एक ऐसे वैश्विक वर्ग के सृजन का प्रयास किया जहां आध्यात्मिक पवित्रता ही एकमात्र और अंतिम लक्ष्य है। एक ऐसे समय जब राजनैतिक शक्ति का संघर्ष पागलपन के रूप में प्रचलित था, सूफी संतों ने लोगों को नैतिक बाध्यता का पाठ पढ़ाया। संघर्ष और तनाव से टूटी दुनिया के लिए उन्होंने शांति और सौहार्द लाने का प्रयास किया। सूफीवाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने अपनी प्रेम की भावना को विकसित कर हिन्दू - मुस्लिम पूर्वा ग्रहों के भेद मिटाने में सहायता दी और इन दोनों धार्मिक समुदायों के बीच भाई चारे की भावना उपत्न्न की।

BankExamsToday.com

मुगल राजवंश

भारत में मुगल राजवंश महानतम शासकों में से एक था। मुगल शासकों ने हज़ारों लाखों लोगों पर शासन किया। भारत एक नियम के तहत एकत्र हो गया और यहां विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक और राजनैतिक समय अवधि मुगल शासन के दौरान देखी गई। पूरे भारत में अनेक मुस्लिम और हिन्दु राजवंश टूटे, और उसके बाद मुगल राजवंश के संस्थापक यहां आए। कुछ ऐसे लोग हुए हैं जैसे कि बाबर, जो महान एशियाई विजेता तैमूर लंग का पोता था और गंगा नदी की घाटी के उत्तरी क्षेत्र से आए विजेता चंगेज़ खान, जिसने खैबर पर कब्जा करने का निर्णय लिया और अंततः पूरे भारत पर कब्ज़ा कर लिया।

बाबर (1526-1530):यह तैमूर लंग और चंगेज़ खान का प्रपौत्र था जो भारत में प्रथम मुगल शासक थे। उसने पानीपत के प्रथम युद्धमें 1526 के दौरान लोधी वंश के साथ संघर्ष कर उन्हें पराजित किया और इस प्रकार अंत में मुगल राजवंश की स्थापना हुई। बाबर ने 1530 तक शासन किया और उसके बाद उसका बेटा हुमायूं गद्दी पर बैठा।

India's Best Current Affairs Android App

हुमायूं (1530-1540 और 1555-1556):बाबर का सबसे बड़ा था जिसने अपने पिता के बाद राज्य संभाला और मुगल राजवंश का द्वितीय शासक बना। उसने लगभग 1 दशक तक भारत पर शासन किया किन्तु फिर उसे अफगानी शासक शेर शाह सूरी ने पराजित किया। हुमायूं अपनी पराजय के बाद लगभग 15 वर्ष तक भटकता रहा। इस बीच शेर शाह मौत हो गई और हुमायूं उसके उत्तरवर्ती सिकंदर सूरी को पराजित करने में सक्षम रहा तथा दोबारा हिन्दुस्तान का राज्य प्राप्त कर सका। जबकि इसके कुछ ही समय बाद केवल 48 वर्ष की उम्र में 1556 में उसकी मौत हो गई।

शेर शाह सूरी (1540-1545):एक अफगान नेता था जिसने 1540 में हुमायूं को पराजित कर मुगल शासन पर विजय पाई। शेर शाह ने अधिक से अधिक 5 वर्ष तक दिल्ली के तख्त पर राज किया और वह इस उप महाद्वीप में अपने अधिकार क्षेत्र को स्थापित नहीं कर सका। एक राजा के तौर पर उसके खाते में अनेक उपलब्धियों का श्रेय जाता है। उसने एक दक्ष लोक प्रशासन की स्थापना की। उसने भूमि के माप के आधार पर राजस्व संग्रह की एक प्रणाली स्थापित की। उसके राज्य में आम आदमी को न्याय मिला। अनेक लोक कार्य उसके अल्प अवधि के शासन कार्य में कराए गए जैसे कि पेड़ लगाना, यात्रियों के लिए कुएं और सरायों का निर्माण कराया गया, सड़कें बनाई गई, उसी के शासन काल में दिल्ली से काबुल तक ग्रांड ट्रंक रोड बनाई गई। मुद्रा को बदल कर छोटी रकम के चांदी के सिक्के बनवाए गए, जिन्हें दाम कहते थे। यद्यपि शेर शाहतख्त पर बैठने के बाद अधिक समय जीवित नहीं रहा और 5 वर्ष के शासन काल बाद 1545 में उसकी मौत हो गई।

अकबर (1556-1605):हुमायूं के उत्तराधिकारी, अकबर काजन्म निर्वासन के दौरान हुआ था और वह केवल 13 वर्ष का था जब उसके पिता की मौत हो गई। अकबर को इतिहास में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वह एकमात्र ऐसा शासक था जिसमें मुगल साम्राज्य की नींव का संपुष्ट बनाया। लगातार विजय पाने के बाद उसने भारत के अधिकांश भाग को अपने अधीन कर लिया।जो हिस्से उसके शासन में शामिल नहीं थे उन्हें सहायक भाग घोषित किया गया।उसने राजपूतों के प्रति भी उदारवादी नीति अपनाई और इस प्रकार उनसे खतरे को कम किया। अकबर न केवल एक महान विजेता था बल्कि वह एक सक्षम संगठन कर्ता एवं एक महान प्रशासक भी था। उसने ऐसा संस्थानों की स्थापना की जो एक प्रशासनिक प्रणाली की नींव सिद्ध हुए, जिन्हें ब्रिटिश कालीन भारत में भी प्रचालित किया गया था। अकबर के शासन काल में गैर मुस्लिमों के प्रति उसकी उदारवादी नीतियों, उसके धार्मिक नवाचार, भूमि राजस्व प्रणाली और उसकी प्रसिद्ध मनसबदारी प्रथा के कारण उसकी स्थिति भिन्न है। अकबर की मनसबदारी प्रथा मुगल सैन्य संगठन और नागरिक प्रशासन का आधार बनी।

BankExamsToday.com

अकबर की मृत्यु उसके तख्त पर आरोहण के लगभग 50 साल बाद 1605 में हुई और उसे सिकंदरा में आगरा के बाहर दफनाया गया। तब उसके बेटे जहांगीर ने तख्त को संभाला।

जहांगीर:अकबर के स्थान पर उसके बेटे सलीम नेतख्तोताज़ को संभाला, जिसने जहांगीर की उपाधि पाई, जिसका अर्थ होता है दुनिया का विजेता। उसने मेहर उन निसा से निकाह किया, जिसे उसने नूरजहां (दुनिया की रोशनी) का खिताब दिया। वह उसे बेताहाशा प्रेम करता था और उसने प्रशासन की पूरी बागडोर नूर जहां को सौंप दी। उसने कांगड़ा और किश्वर के अतिरिक्त अपने राज्य का विस्तार किया तथा मुगल साम्राज्य में बंगाल को भी शामिल कर दिया। जहांगीर के अंदर अपने पिता अकबर जैसी राजनैतिक उद्यम शीलता की कमी थी। किन्तु वह एक ईमानदार और सहनशील शासक था। उसने समाज में सुधार करने का प्रयास किया और वह हिन्दुओं, ईसाइयों तथा ज्यूस के प्रति उदार था। जबकि सिक्खों के साथ उसके संबंध तनाव पूर्ण थे और दस सिक्ख गुरूओं में से पांचवें गुरू अर्जुन

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

देव को जहांगीर के आदेश पर मौत के घाट उतार दिया गया था, जिन पर जहांगीर के बगावती बेटे खुसरू की सहायता करने का अरोप था। जहांगीर के शासन काल में कला, साहित्य और वास्तुकला फली फूली और श्री नगर में बनाया गया मुगल गार्डन उसकी कलात्मक अभि रुचि का एक स्थायी प्रमाण है। उसकी मृत्यु 1627 में हुई।

शाहजहां:जहांगीर के बाद उसके द्वितीय पुत्र खुर्रम ने 1628 में तख्त संभाला। खुर्रम ने शाहजहां का नाम ग्रह किया जिसका अर्थ होता है दुनिया का राजा। उसने उत्तर दिशा में कंधार तक अपना राज्य विस्तारित किया और दक्षिण भारत का अधिकांश हिस्सा जीत लिया। मुगल शासन शाहजहां के कार्यकाल में अपने सर्वोच्च बिन्दु पर था। ऐसा अतुलनीय समृद्धि और शांति के लगभग 100 वर्षों तक हुआ। इसके परिणाम स्वरूप इस अवधि में दुनिया को मुगल शासन की कलाओं और संस्कृति के अनोखे विकास को देखने का अवसर मिला। शाहजहां को वास्तु का राजा कहा जाता है। लाल किला और जामामस्जिद, दिल्ली में स्थित ये दोनों इमारतें सिविल अभियांत्रिकी तथा कला की उपलब्धि के रूप में खड़ी हैं। इन सब के अलावा शाहजहां को आज ताज महल, के लिए याद किया जाता है, जो उसने आगरा में यमुना नदी के किनारे अपनी प्रिय पत्नी मुमताज महल के लिए सफेद संगमरमर से बनवाया था।

औरंगज़ेब:औरंगज़ेब ने 1658 में तख्त संभाला और 1707 तक राज्य किया। इस प्रकार औरंगज़ेब ने 50 वर्ष तक राज्य किया। जो अकबर के बराबर लम्बा कार्य काल था। परन्तु दुर्भाग्य से उसने अपने पांचों बेटों को शाही दरबार से दूर रखा और इसका नतीजा यह हुआ कि उनमें से किसी को भी सरकार चलाने की कला का प्रशिक्षण नहीं मिला। इससे मुगलों को आगे चल कर हानि उठानी पड़ी। अपने 50 वर्ष के शासन काल में औरंगजेब ने इस पूरे उप महाद्वीप को एक साथ एक शासन लाने की आकांक्षा को पूरा करने का प्रयास किया। यह उसी के कार्यकाल में हुआ जब मुगल शासन अपने क्षेत्र में सर्वोच्च बिन्दु तक पहुंचा। उसने वर्षों तक कठिन परिश्रम किया किन्तु अंत में उसका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। उसने 1707 में 90 वर्ष की आयु पर मृत्यु के समय कोई संपत्ति नहीं छोड़ी। उसकी मौत के साथ विघटन कारी ताकतें उठ खड़ी हुईं और शक्तिशाली मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।

BankExamsToday.com

सिक्ख शक्ति का उदय

सिक्ख धर्म की स्थापना सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में गुरू नानक देव द्वारा की गई थी। गुरू नानक का जन्म 15 अप्रैल 1469 को पश्चिमी पंजाब केएक गांव तलवंडी में हुआ था। एक बालक के रूप में उन्हें दुनियावी चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। तेरह वर्ष की उम्र में उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई। इसके बाद उन्होंने देश के लगभग सभी भागों में यात्रा की और मक्का तथा बगदाद भी गए और अपना संदेश सभी को दिया। उनकी मृत्यु पर उन्हें 9 अन्य गुरूओं ने अपनाया।

गुरू अंगद देव जी (1504-1552) तेरह वर्ष (1539-1552) के लिए गुरू रहे।उन्होंने गुरू मुखी की नई लिपि का सृजन किया और सिक्खों को एक लिखित भाषा प्रदान की। उनकी मृत्यु के बाद गुरू अमरदास जी (1479-1574) ने उनका उत्तराधिकार लिया। उन्होंने अत्यंत समर्पण दर्शाया और सिक्ख धर्म के अविभाज्य भाग्य के रूप में लंगर किया। गुरू रामदास जी ने चौथे गुरू का पद संभाला, उन्होंने श्लोक बनाए, जिन्हें आगे चलकर पवित्र लेखनों में शामिल किया गया। गुरू अर्जन देव जी सिक्ख धर्म के पांचवें गुरू बने।उन्होंने विश्व प्रसिद्ध हरमंदिर साहिब का निर्माण कराया जो अमृतसर में स्थित स्वर्ण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने पवित्र ग्रंथ साहिब का संकलन किया, जो सिक्ख धर्म की एक पवित्र धार्मिक पुस्तक है।गुरू अर्जन देव ने 1606 में शरीर छोड़ा और उनके बाद श्री

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

हर गोविंद आए, जिन्होंने स्थायी सेना बनाए रखी और सांकेतिक रूप से वे दो तलवारें धारण करते थे, जो आध्यात्मिकता और मानसिक शक्ति की प्रतीक है।

गुरू श्री हर राय सांतवें गुरू थे जिनका जन्म 1630 में हुआ और उन्होंने अपना अधिकांश जीवन ध्यान और गुरू नानक की बताई गई बातों के प्रचार में लगाया। उनकी मृत्यु 1661 में हुई और उनके बाद उनके द्वितीय पुत्र हर किशन ने गुरू का पद संभाला। गुरू श्री हर किशन जी को 1661 में ज्ञान प्राप्ति हुई। उन्होंने अपना जीवन दिल्ली के माहमारी से पीडित लोगों की सेवा और सुश्रुसा में लगाया। जिस स्थान पर उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस ली उसे दिल्ली में गुरूद्वारा बंगला साहिब कहा जाता है। श्री गुरू तेग बहादुर 1664 में गुरू बने। जब कश्मीर के मुगल राज्यपाल ने हिन्दुओं को बल पूर्वक धर्म परिवर्तन कराने के लिए दबाव डाला तब गुरू तेगबहादुर ने इसके प्रति संघर्ष करने का निर्णय लिया। गुरूद्वारा सीसगंज, दिल्ली उसी स्थान पर है जहां गुरू साहिब ने अंतिम सांसें ली और गुरूद्वारा रकाबगंज में उनका अंतिम संस्कार किया गया। दसवें गुरू, गुरू गोविंदसिंह का जन्म 1666 में हुआ और वे अपने पिता गुरू तेग बहादुर की मृत्यु के बाद गुरू बने। गुरू गोविंद सिंह ने अपनी मृत्यु के समय गुरू ग्रंथसाहिब को सिक्ख धर्म का उच्चतम प्रमुख कहा और इस प्रकार एक धार्मिक गुरू को मनो नीत करने की लंबी परम्परा का अंत हुआ।

छत्रपति शिवाजी महाराज

छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680) महाराष्ट्र के महानायक थे, जिन्होंने मुगलों के सामने सबसे पहले गंभीर चुनौती रखी और अंततः उनके भार तके साम्राज्य को प्रभावित किया।

BankExamsToday.com

वे अजेय योद्धा और6 एक प्रशंसा करने योग्य सेनानायक थे। उन्होंने एक मजबूत सेना और नौ सेना तैयार की। उन्होंने 18 साल की अल्पावस्था में यह संघर्ष करने की भावना सबसे पहले प्रदर्शित की, जब उन्होंने महाराष्ट्र के अनेक किलों पर फतह प्राप्त की। उन्होंने अनेक किलों का निर्माण और सुधारभी कराया तथा जासूसी की एक उच्च दक्ष प्रणाली का रख रखाव किया। गुरिल्लायुद्ध का उपयोग उनकी युद्ध तकनीकी की एक अनोखी और प्रमुख विशेषता थी।

यह शिवाजी की बुद्धिमानी थी कि उन्होंने बिखरे हुए लोगों को संगठित किया और एक राष्ट्र के निर्माण हेतु उनके बीच मेल कराया, जो उनकी शक्ति और सफलता के नेतृत्व से संभव हुआ। शिवाजी नागरिकों, आम जनता की ओर मुड़े और उन्हें एक उत्कृष्ट संघर्ष साधन के रूप में परिवर्तित किया और जिसे दक्षिण के सुल्तानों और मुगलों के खिलाफ उन्होंने प्रभावी रूप से उपयोग किया।

शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित राज्य '**हिंदवी स्वराज**' के नाम से जाना जाता है, जो समय के दौरान आगे बढ़ा और भारत के शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित हुआ। शिवाजी महाराज की मृत्यु 1680 में 50 वर्ष की आयु में रायगढ़ नामक स्थान पर हुई। उनकी समय से पहले मृत्यु के कारण महाराष्ट्र के इतिहास में एक गंभीर कमी पैदा हुई।

शिवाजी अपने सिद्धांतों में एक असाधारण व्यक्ति थे और उन्होंने एक स्वतंत्र राज्य से अपना जीवन तराशा, शक्तिशाली मुगल साम्राज्य को चुनौती दी और अपने पीछे एक ऐसी विरासत छोड़ी जो भावी पीढियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत सिद्ध हुई।

India's Best Current Affairs Android App

मुगल शासन काल का पतन

मुगल शासन काल का विघटन 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद आरंभ हो गया था। उनके पुत्र और उत्तराधिकारी, बहादुर शाह जफर पहले ही बूढ़े हो गए थे, जब वे सिहांसन पर बैठे और उन्हें एक के बार एक बगावतों का सामना करना पड़ा। उस समय साम्राज्य के सामने मराठों और ब्रिटिश की ओर से चुनौतियां मिल रही थी। करो में स्फीति और धार्मिक असहनशीलता के कारण मुगल शासन की पकड़ कमजोर हो गई थी। मुगल साम्राज्य अनेक स्वतंत्र या अर्ध स्वतंत्रराज्यों में टूट गया। इरान के नादिरशाह ने 1739 में दिल्ली पर आक्रमण किया और मुगलों की शक्ति की टूटन को जाहिर कर दिया। यह साम्राज्य तेजी सेइस सीमा तक टूट गया कि अब यह केवल दिल्ली के आस पास का एक छोटा सा जिला रहगया। फिर भी उन्होंने 1850 तक भारत के कम से कम कुछ हिस्सों में अपना राज्य बनाए रखा, जबकि उन्हें पहले के दिनों के समान प्रतिष्ठा और प्राधिकार फिर कभी नहीं मिला। राज शाही साम्राज्य बहादुर शाह द्वितीय के बाद समाप्त हो गया, जो सिपाहियों की बगावत में सहायता देने के संदेह पर ब्रिटिश राज द्वारा रंगून निर्वासित कर दिए गए थे। वहां 1862 में उनकी मृत्यु हो गई।

1857 में भारतीय विद्रोह

भारत पर विजय, जिसे प्लासी के संग्राम (1757) से आरंभ हुआ माना जा सकता है, व्यावहारिक रूप से 1856 में डलहौजी के कार्यकाल का अंत था। किसी भी अर्थ में यह सुचारु रूप से चलने वाला मामला नहीं था, क्योंकि लोगों के बढ़ते असंतोष से इस अवधि के दौरान अनेक स्थानीय प्रांतियां होती रहीं। यद्यपि 1857 का विद्रोह, जो मेरठ में सैन्य कर्मियों की बगावत से शुरू हुआ, जल्दी ही आगे फैल गया और इससे ब्रिटिश शासन को एक गंभीर चुनौती मिली। जबकि ब्रिटिश शासन इसे एक वर्ष के अंदर ही दबाने में सफल रहा, यह निश्चित रूपसे एक ऐसी लोक प्रिय क्रांति थी जिसमें भारतीय शासक, जनसमूह और नागरिक सेना शामिल थी, जिसने इतने उत्साह से इसमें भाग लिया कि इसे भारतीय स्वतंत्रताका पहला संग्राम कहा जा सकता है।

BankExamsToday.com

ब्रिटिश द्वारा जमीनदारी प्रथा को शुरू करना, जिसमें मजदूरों को भारी करों के दबाव से कुचल डाला गया था, इससे जमीन के मालिकों का एक नया वर्गबना। दस्त कारों को ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आगमन से नष्ट कर दिया गया। धर्म और जाति प्रथा, जिसने पारम्परिक भारतीय समाज की सुदृढ़ नींव बनाई थी अब ब्रिटिश प्रशासन के कारण खतरे में थी। भारतीय सैनिक और साथ ही प्रशासन में कार्यरत नागरिक वरिष्ठ पदों पर पदोन्नत नहीं किए गए, क्योंकि ये यूरोपियन लोगों के लिए आरक्षित थे। इस प्रकार चारों दिशाओं मेंब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष और बगावत की भावना फैल गई, जो मेरठ में सिपाहियों के द्वारा किए गए इस बगावत के स्वर में सुनाई दी जब उन्हें ऐसी कारतूस मुंह से खोलने के लिए कहा गया जिन पर गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी, इससे उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हुईं। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों ही सैनिकों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से मना कर दिया, जिन्हें 9 मई 1857 को अपने साथी सैनिकों द्वारा क्रांति करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया।

बगावती सेना ने जल्दी ही दिल्ली पर कब्जा कर लिया और यह क्रांति एकबड़े क्षेत्र में फैल गई और देश के लगभग सभी भागों में इसे हाथों हाथ लिया गया। इसमें सबसे भयानक युद्ध दिल्ली, अवध, रोहिल खण्ड, बुंदेल खण्ड, इलाहबाद, आगरा, मेरठ और पश्चिमी बिहार में लड़ा गया। विद्रोही सेनाओं में बिहार में कंवर सिंह के तथा दिल्ली में बख्तखान के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन को एक करारी चोट दी। कानपुर में नाना साहेब ने पेशावर के रूप में उद्घ घोषणा की और तात्या टोपे ने उनकी सेनाओं का नेतृत्व किया जो एक निर्भीक नेता थे। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

ने ब्रिटिश के साथ एक शानदार युद्ध लड़ा और अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया। भारत के हिन्दु, मुस्लिक, सिक्ख और अन्य सभी वीर पुत्र कंधे से कंधा मिलाकर लड़े और ब्रिटिश राज को उखाड़ने का संकल्प लिया। इस क्रांति को ब्रिटिश राज द्वारा एक वर्ष के अंदर नियंत्रित कर लिया गया जो 10 मई 1857 को मेरठ में शुरू हुई और 20 जून 1858 को ग्वालियर में समाप्त हुई।

आधुनिकभारत

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947)

पुराने समय में जब पूरी दुनिया के लोग भारत आने के लिए उत्सुक रहा करते थे। यहां आर्य वर्ग के लोग मध्य यूरोप से आए और भारत में ही बस गए। उनके बाद मुगल आए और वे भी भारत में स्थायी रूप से बस गए। चंगेज़खान, एक मंगोलियाई था जिसने भारत पर कई बार आक्रमणकिया और लूट पाट की। अलेक्ज़ेडर महान भी भारत पर विजय पाने के लिए आया किन्तु पोरस के साथ युद्ध में पराजित होकर वापस चला गया। हेन सांग नामक एकचीनी नागरिक यहां ज्ञान की तलाश में आया और उसने नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालयों में भ्रमण किया जो प्राचीन भारतीय विश्व विद्यालय हैं। कोलम्बस भारत आना चाहता था किन्तु उसने अमेरिका के तटों पर उतरना पसंद किया। पुर्तगाल से वास्को डिगामा व्यापार करने अपने देश की वस्तुएं लेकर यहां आया जो भारतीय मसाले ले जाना चाहता था। यहां फ्रांसीसी लोग भी आए और भारत में अपनी कॉलोनियां बनाई।

BankExamsToday.com

अंत में ब्रिटिश लोग आए और उन्होंने लगभग 200 साल तक भारत पर शासन किया। वर्ष 1757 ने प्लासी के युद्ध के बाद ब्रिटिश जनों ने भारत पर राजनैतिक अधिकार प्राप्त कर लिया। और उनका प्रभुत्व लॉर्ड डलहौजी के कार्य काल में यहां स्थापित हो गया जो 1848 में गवर्नर जनरल बने। उन्होंने पंजाब, पेशावर और भारत के उत्तर पश्चिम सेपठान जनजातियों को संयुक्त किया। और वर्ष 1856 तक ब्रिटिश अधिकार और उनके प्राधिकारी यहां पूरी मजबूती से स्थापित हो गए। जबकि ब्रिटिश साम्राज्य में 19वीं शताब्दी के मध्य में अपनी नई ऊंचाइयां हासिल की, असंतुष्ट स्थानीय शासकों, मजदूरों, बुद्धि जीवियों तथा सामान्य नागरिकों ने सैनिकों की तरह आवाज़ उठाई जो उन विभिन्न राज्यों की सेनाओं के समाप्त हो जानेसे बेरोजगार हो गए थे, जिन्हें ब्रिटिश जनों ने संयुक्त किया था और यह असंतोष बढ़ता गया। जल्दी ही यह एक बगावत के रूप में फूटा जिसने 1857 के विद्रोह का आकार लिया।

1857 में भारतीय विद्रोह

भारत पर विजय, जिसे प्लासी के संग्राम (1757) से आरंभ हुआ माना जा सकता है, व्यावहारिक रूप से 1856 में डलहौजी के कार्य काल का अंत था। किसी भी अर्थमें यह सुचारु रूप से चलने वाला मामला नहीं था, क्योंकि लोगों के बढ़ते असंतोष से इस अवधि के दौरान अनेक स्थानीय प्रांतियां होती रहीं। यद्यपि 1857 का विद्रोह, जो मेरठ में सैन्य कर्मियों की बगावत से शुरू हुआ, जल्दी ही आगे फैल गया और इससे ब्रिटिश शासन को एक गंभीर चुनौती मिली। जबकि ब्रिटिश शासन इसे एक वर्ष के अंदर ही दबाने में सफल रहा, यह निश्चित रूपसे एक ऐसी लोक प्रिय क्रांति थी जिसमें भारतीय शासक, जनसमूह और नागरिक सेना शामिल थी, जिसने इतने उत्साह से इसमें भाग लिया कि इसे भारतीय स्वतंत्रताका पहला संग्राम कहा जा सकता है।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

ब्रिटिश द्वारा जमीन दारी प्रथा को शुरू करना, जिसमें मजदूरों को भारी करों के दबाव से कुचल डाला गया था, इससे जमीन के मालिकों का एक नया वर्ग बना। दस्तकारों को ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आगमन से नष्ट कर दिया गया। धर्म और जाति प्रथा, जिसने पारम्परिक भारतीय समाज की सुदृढ़ नींव बनाई थी अब ब्रिटिश प्रशासन के कारण खतरे में थी। भारतीय सैनिक और साथ ही प्रशासन में कार्यरत नागरिक वरिष्ठ पदों पर पदोन्नत नहीं किए गए, क्योंकि ये यूरोपियन लोगों के लिए आरक्षित थे। इस प्रकार चारों दिशाओं में ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष और बगावत की भावना फैल गई, जो मेरठ में सिपाहियों के द्वारा किए गएइस बगावत के स्वर में सुनाई दी जब उन्हें ऐसी कारतूस मुंह से खोलने केलिए कहा गया जिन पर गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी, इससे उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हुईं। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों ही सैनिकों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से मना कर दिया, जिन्हें 9 मई 1857 को अपने साथी सैनिकों द्वारा क्रांति करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया।

बगावती सेना ने जल्दी ही दिल्ली पर कब्जा कर लिया और यह क्रांति एक बड़े क्षेत्र में फैल गई और देश के लगभग सभी भागों में इसे हाथों हाथ लिया गया।इसमें सबसे भयानक युद्ध दिल्ली, अवध, रोहिलखण्ड, बुंदेल खण्ड, इलाहबाद, आगरा, मेरठ और पश्चिमी बिहार में लड़ा गया। विद्रोही सेनाओं में बिहार में कंवर सिंह के तथा दिल्ली में बख्तखान के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन को एक करारी चोट दी। कानपुर में नाना साहेब ने पेशावर के रूप में उद्घ घोषणा कीऔर तात्या टोपे ने उनकी सेनाओं का नेतृत्व किया जो एक निर्भीक नेता थे। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने ब्रिटिश के साथ एक शानदार युद्ध लड़ा और अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया। भारत के हिन्दु, मुस्लिक, सिक्ख और अन्य सभी वीर पुत्र कंधे से कंधा मिलाकर लड़े और ब्रिटिश राज को उखाड़ ने का संकल्प लिया। इस क्रांति को ब्रिटिश राज द्वारा एक वर्ष के अंदर नियंत्रित कर लिया गया जो 10 मई 1857 को मेरठ में शुरू हुई और 20 जून 1858 को ग्वालियर में समाप्त हुई।

BankExamsToday.com

ईस्ट इन्डिया कम्पनी का अंत

1857 के विद्रोह की असफलता के परिणाम स्वरूप, भारत में ईस्ट इन्डिया कंपनी के शासन का अंत भी दिखाई देने लगा तथा भारत के प्रति ब्रिटिश शासन की नीतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिसके अंतर्गत भारतीय राजाओं, सरदारों और जमींदारों को अपनी ओर मिलाकर ब्रिटिश शासन को सुदृढ़ करने के प्रयास किए गए। रानी विक्टोरिया के दिनांक 1 नवम्बर 1858 की घोषणा के अनुसार यह उद्घोषित किया गया कि इसके बाद भारत का शासन ब्रिटिश राजा के द्वारा व उनके वास्ते सेक्रेटरी आफ स्टेट द्वारा चलाया जाएगा। गवर्नर जनरल को वायसराय की पदवी दी गई, जिसका अर्थ था कि वह राजा का प्रतिनिधि था। रानी विक्टोरिया जिसका अर्थ था कि वह सम्राज्ञी की पदवी धारण करें और इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने भारतीय राज्य के आंतरिक मामलों में दखल करने की असीमित शक्तियां धारण कर लीं। संक्षेप में भारतीय राज्य सहित भारत पर ब्रिटिश सर्वोच्चता सुदृढ़ रूप से स्थापित कर दी गई। अंग्रेजों ने वफादार राजाओं, जमींदारों और स्थानीय सरदारों को अपनी सहायता दी जब कि, शिक्षित लोगों वआम जन समूह (जनता) की अनदेखी की। उन्होंने अन्य स्वार्थियों जैसे ब्रिटिश व्यापारियों, उद्योगपतियों, बागान मालिकों और सिविल सेवा के कार्मिकों (सर्वेन्ट्स) को बढ़ावा दिया। इस प्रकार भारत के लोगों को शासन चलाने अथवा नीतियां बनाने में कोई अधिकार नहीं था। परिणाम स्वरूप ब्रिटिश शासन से लोगों को घृणा बढ़ती गई, जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म दिया।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

स्वतंत्रताआंदोलन का नेतृत्व राजा राम मोहन राय, बंकिम चन्द्र और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे सुधार वादियों के हाथों में चला गया। इस दौरान राष्ट्रीय एकता की मनोवैज्ञानिक संकल्पना भी, एक सामान्य विदेशी अत्याचारी/ताना शाहके विरूद्ध संघर्ष की आग को धीरे-धीरे आगे बढ़ाती रही।

राजा राम मोहन राय (1772-1833)ने समाज को उसकी बुरी प्रथाओं से मुक्त करने के उद्देश्य से 1928 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने सती, बाल विवाह व परदा पद्धति जैसी बुरी प्रथाओं को समाप्त करने के लिए काम किया, विधवा विवाह स्त्री शिक्षा और भारत में अंग्रेजी पद्धति से शिक्षा दिए जाने का समर्थन किया।इन्हीं प्रयासों के कारण ब्रिटिश शासन द्वारा सती होने को एक कानूनी अपराध घोषित किया गया।

स्वामीविवेकानन्द (1863-1902)जो रामकृष्ण परमहंस के शिष्य/अनुयायी थे, ने 1897 में वेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होंने वेदांतिक दर्शन की सर्वोच्चताका समर्थन किया। 1893 में शिकागो (यू एस ए) की विश्व धर्म कांफ्रेस मेंउनके भाषण ने, पहली बार पश्चिमी लोगों को, हिंदू धर्म की महानता को समझने पर मज़बूर किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई एन सी) का गठन

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी द्वारा 1876 में कल कत्ता में भारत एसोसिएशन के गठन के साथ रखी गई। एसोसिएशन का उद्देश्य शिक्षित मध्यम वर्ग काप्रति निधित्व करना, भारतीय समाज को संगठित कार्यवाही के लिए प्रेरित करना था। एक प्रकार से भारतीय एसोसिएशन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसकी स्थापना सेवा निवृत्त ब्रिटिश अधिकारी ए.ओ.ह्यूम की सहायता की गई थी, की पूर्वगामी थी। 1895 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई एन सी) के जन्म सेनव शिक्षित मध्यम वर्ग के राजनीति में आने के लक्ष्ण दिखाई देने लगे तथा इससे भारतीय राजनीति का स्वरूप ही बदल गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन दिसम्बर 1885 में बम्बई में वोमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ तथा इसमें अन्यों के साथ-साथ भाग लिया।

BankExamsToday.com

सदी के बदलने के समय, बाल गंगाधर तिलक और अरविंद घोष जैसे नेताओं द्वारा चलाए गए "स्वदेशी आंदोलन" के मार्फत्स्वतंत्रता आंदोलन सामान्य अशिक्षित लोगों तक पहंचा। 1906 में कलकत्तामें आयोजित कांग्रेस अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी ने की थी, ने "स्वराज्य" प्राप्त करने का नारा दिया अर्थात् एक प्रकार का ऐसास्व शासन जा ब्रिटिश नियंत्रण में चुने हुए व्यक्तियों द्वारा चलाया जाने वाला शासन हो, जैसा कनाडा व आस्ट्रेलिया में, जो ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन थे, में प्रचलित था।

बीच, 1909 में ब्रिटिश सरकार ने, भारत सरकार के ढांचे में कुछ सुधार लाने की घोषणा की, जिसे मोरले-मिन्टोसुधारों के नाम से जाना जाता है। परन्तु इन सुधारों से निराशा ही प्राप्त हुई क्योंकि इसमें प्रतिनिधि सरकार की स्थापना की दिशा में बढ़ने का कोई प्रयास दिखाई नहीं दिया। मुसलमानों को विशेष प्रतिनिधित्व दिए जाने के प्रावधान को हिंदु-मुसलमान एकता जिस पर राष्ट्रीय आंदोलन टिका हुआ था, के लिए खतरे के रूप में देखा गया अत: मुसलमानों के नेता मोहम्मद अली जिन्ना समेत सभी नेताओं द्वारा इन सुधारों का ज़ोरदार विरोध किया गया। इसके बाद सम्राट जार्ज पंचम ने दिल्ली में दो घोषणाएं की, प्रथम बंगाल विभाजन जो 1905 में किया गया था को निरस्त किया गया, द्वितीय, यह घोषणा की गई कि भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली लाई जाएगी।

वर्ष 1909 में घोषित सुधारों से असंतुष्ट होकर स्वराज आन्दोलन के संघर्ष को और तेज कर दिया गया। जहां एक ओर बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चन्द्र पाल जैसे महान नेताओं ने ब्रिटिश राज के खिलाफ

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

एक तरह से लगभग युद्ध ही शुरू कर दिया तो दूसरी ओर क्रांतिकारियों ने हिंसात्मक गतिविधियां शुरू कर दीं। पूरे देश में ही एक प्रकार की अस्थिरता की लहर चल पड़ी। लोगों के बीच पहले से ही असंतोष था, इसे और बढ़ाते हुए 1919 में रॉलेट एक्ट अधिनियम पारित किया गया, जिससे सरकार ट्रायल के बिना लोगों को जेल में रख सकती थी। इससे लोगों में स्वदेशकी भावना फैली और बड़े-बड़े प्रदर्शन तथा धरने दिए जाने लगे, जिन्हें सर कारने जलियांवाला बाग नर संहार जैसी अत्याचारी गतिविधियों से दमित करने का प्रयास किया, जहां हजारों बेगुनाह शांति प्रिय व्यक्तियों को जनरल डायर के आदेश पर गोलियों से भून दिया गया।

जलियांवाला बाग नरसंहार

दिनांक 13 अप्रेल 1919 को जलियांवाला बाग में हुआ नरसंहार भारत में ब्रिटिश शासन काएक अति घृणित अमानवीय कार्य था। पंजाब के लोग बैसाखी के शुभ दिन जलियांवाला बाग, जो स्वर्ण मंदिर के पास है, ब्रिटिश शासन की दमन कारी नीतियों के खिलाफ अपना शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शित करने के लिए एकत्रित हुए। अचानक जनरल डायर अपने सशस्त्र पुलिस बल के साथ आया और निर्दोष निहत्थे लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलाई, तथा महिलाओं और बच्चों समेत सैंकड़ों लोगों को मार दिया। इस बर्बर कार्य का बदला लेने के लिए बाद में ऊधम सिंह ने जलियांवाला बाग के कसाई जनरल डायर को मार डाला।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के बाद मोहनदास करमचन्द गांधी कांग्रेस के निर्विवाद नेता बने। इस संघर्ष के दौरान महात्मा गांधी ने अहिंसात्मक आंदोलन की नई तरकीब विकसित की, जिसे उसने "सत्याग्रह" कहा, जिसका ढीला-ढाला अनुवाद "नैतिक शासन" है।गांधी जो स्वयं एक श्रद्धावान हिंदु थे, सहिष्णुता, सभी धर्मों में भाई में भाईचारा, अहिंसा व सादा जीवन अपनाने के समर्थक थे। इसके साथ, जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस जैसे नए नेता भी सामने आए व राष्ट्रीय आंदोलन के लिए संपूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य अपनाने की वकालत की।

BankExamsToday.com

असहयोग आंदोलन

सितम्बर 1920 से फरवरी 1922 के बीच महात्मा गांधी तथा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन चलाया गया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई जागृति प्रदान की। जलियांवाला बाग नर संहारसहित अनेक घटनाओं के बाद गांधी जी ने अनुभव किया कि ब्रिटिश हाथों में एक उचित न्याय मिलने की कोई संभावना नहीं है इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार से राष्ट्र के सहयोग को वापस लेने की योजना बनाई और इस प्रकार असहयोग आंदोलन की शुरूआत की गई और देश में प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रभाव हुआ। यह आंदोलन अत्यंत सफल रहा, क्योंकि इसे लाखों भारतीयों का प्रोत्साहन मिला। इस आंदोलन से ब्रिटिश प्राधिकारी हिल गए।

साइमन कमीशन

असहयोग आंदोलन असफल रहा। इसलिए राजनैतिक गतिविधियों में कुछ कमी आ गई थी। साइमन कमीशन को ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत सरकार की संरचना में सुधार का सुझाव देने के लिए 1927 में भारत भेजा गया।इस कमीशन में कोई भारतीय सदस्य नहीं था और सरकार ने स्वराज के लिए इस मांग को मानने की कोई इच्छा नहीं दर्शाई। अत: इससे पूरे देश में विद्रोह की एक चिंगारी भड़क उठी तथा कांग्रेस के साथ मुस्लिम लीग ने भी लाला

India's Best Current Affairs Android App

लाजपतराय के नेतृत्व में इसका बहिष्कार करने का आव्हान किया। इसमें आने वाली भीड़ पर लाठी बरसाई गई और लाला लाजपत राय, जिन्हें शेर – ए – पंजाब भी कहते हैं, एक उपद्रव से पड़ी चोटों के कारण शहीद हो गए।

नागरिक अवज्ञा आंदोलन

महात्मा गांधी ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसकी शुरूआत दिसंबर 1929 में कांग्रेस के सत्र के दौरान की गई थी। इस अभियान का लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के आदेशों की संपूर्ण अवज्ञा करना था। इस आंदोलन के दौरान यह निर्णय लिया गया कि भारत 26 जनवरी को पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस मनाएगा। अत: 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में बैठ कें आयोजित की गई और कांग्रेस ने तिरंगा लहराया। ब्रिटिश सरकार ने इस आंदोलन को दबाने की कोशिश की तथा इसके लिए लोगों को निर्दयता पूर्वक गोलियों से भून दिया गया, हजारों लोगों को मार डाला गया। गांधी जी और जवाहर लाल नेहरू के साथ कई हजार लोगों को गिरफ्तार किया गया। परन्तु यह आंदोलन देश के चारों कोनों में फैल चुका था। इसके बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा गोल मेज सम्मेलन आयोजित किया गया और गांधी जी ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में लंदन में भाग लिया। परन्तु इस सम्मेलन का कोई नतीजा नहीं निकला और नागरिक अवज्ञा आंदोलन पुन: जीवित हो गया। इस समय, विदेशी निरंकुश शासन के खिलाफ प्रदर्शन स्वरूप दिल्ली में सेंट्रल असेम्बली हॉल (अब लोकसभा) में बम फेंकने के आरोप में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को गिरफ्तार किया गया था। 23 मार्च 1931 को उन्हें फांसी की सजा देदी गई।

भारत छोड़ो आंदोलन

BankExamsToday.com

अगस्त 1942 में गांधी जी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" की शुरूआत की तथा भारत छोड़ कर जाने के लिए अंग्रेजों को मजबूर करने के लिए एक सामूहिक नागरिक अवज्ञा आंदोलन "करो या मरो" आरंभ करने का निर्णय लिया। इस आंदोलन के बाद रेलवे स्टेशनों, दूरभाष कार्यालयों, सरकारी भवनों और अन्य स्थानों तथा उपनिवेश राज के संस्थानों पर बड़े स्तर पर हिंसा शुरू हो गई। इसमें तोड़फोड़ की ढेर सारी घटनाएं हुईं और सरकार ने हिंसा की इन गतिविधियों के लिए गांधी जी को उत्तरदायी ठहराया और कहा कि यह कांग्रेस की नीति का एक जान बूझकर किया गया कृत्य है। जबकि सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, कांग्रेस पर प्रतिबंद लगा दिया गया और आंदोलन को दबाने के लिए सेना को बुला लिया गया। इस बीच नेता जी सुभाष चंद्र बोस, जो अब भी भूमिगत थे, कलकत्ता में ब्रिटिश नजर बंदी से निकल कर विदेश पहुंच गए और ब्रिटिश राज को भारत से उखाड़ फेंकने के लिए उन्होंने वहां इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) या आजाद हिंद फौज का गठन किया।

द्वितीय विश्व युद्ध सितम्बर 1939 में शुरू हुआ और भारतीय नेताओं से परामर्श किए बिना भारत की ओर से ब्रिटिश राज के गर्वनर जनरल ने युद्ध की घोषणा कर दी।सुभाष चंद्र बोस ने जापान की सहायता से ब्रिटिश सेनाओं के साथ संघर्ष किया और अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों को ब्रिटिश राज के कब्जे से मुक्त करा लिया तथा वे भारत की पूर्वोत्तर सीमा पर भी प्रवेश कर गए। किन्तु 1945 में जापान ने पराजय पाने के बाद नेता जी एक सुरक्षित स्थान पर आने के लिए हवाई जहाज से चले परन्तु एक दुर्घटना वश उनके हवाई जहाज के साथ एक हादसा हुआ और उनकी मृत्यु हो गई। ""तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा" – उनके द्वारा दिया गया सर्वाधिक लोकप्रिय नारा था, जिसमें उन्होंने भारत के लोगों को आजादी के इस संघर्ष में भाग लेने का आमंत्रण दिया।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

भारत और पाकिस्तान का बंटवारा

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने पर ब्रिटिश प्रधान मंत्री क्लेमेंट रिचर्ड एटली के नेतृत्व में लेबर पार्टी शासन में आई। लेबर पार्टी आजादी के लिए भारतीय नागरिकों के प्रति सहानुभूति की भावना रखती थी। मार्च 1946 में एक केबिनैट कमीशन भारत भेजा गया, जिसके बाद भारतीय राजनैतिक परिदृश्य का सावधानी पूर्वक अध्ययन किया गया, एक अंतरिम सरकार के निर्माण का प्रस्ताव दिया गया और एक प्रांतीय विधान द्वारा निर्वाचित सदस्यों और भारतीय राज्यों के मनोनीत व्यक्तियों को लेकर संघटक सभा का गठन किया गया। जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व ने एक अंतरिमसरकार का निर्माण किया गया। जबकि मुस्लिम लीग ने संघटक सभा के विचार विमर्श में शामिल होने से मना कर दिया और पाकिस्तान के लिए एक अलग राज्य बनाने में दबाव डाला। लॉर्ड माउंटबेटन, भारत के वाइसराय ने भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत के विभाजन की एक योजना प्रस्तुत की और तब भारतीय नेताओं के सामने इस विभाजन को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि मुस्लिम लीग अपनी बात पर अड़ी हुई थी।

इस प्रकार 14 अगस्त 1947 की मध्य रात्रि को भारत आजाद हुआ (तब से हर वर्ष भारत में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है)। जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बनेऔर 1964 तक उनका कार्यकाल जारी रहा। राष्ट्र की भावनाओं को स्वर देते हुए प्रधानमंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा,

कई वर्ष पहले हमने नियति के साथ निश्चित किया और अब वह समय आ गया है जब हम अपनी शपथ दोबारा लेंगे, समग्रता से नहींया पूर्ण रूप से नहीं बल्कि अत्यंत भरपूर रूप से। मध्य रात्रि के घंटे की चोट पर जब दुनिया सो रही होगी हिन्दुस्तान जीवन और आजादी के लिए जाग उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में दुर्लभ ही आता है, जब हम अपने पुराने कवच से नए जगत में कदम रखेंगे, जब एक युग की समाप्ति होगी और जब राष्ट्र की आत्मा लंबे समय तक दमित रहने के बाद अपनी आवाज पा सकेगा। हम आज दुर्भाग्य का एक युग समाप्त कर रहे हैं और भारत अपनी दोबारा खोज आरंभ कर रहा है।

BankExamsToday.com

पहले, संघटक सभा का गठन भारतीय संविधान को रूपरेखा देना के लिए जुलाई 1946 में किया गया था और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को इसका राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया था। भारतीय संविधान, जिसे 26 नवम्बर 1949 को संघटक सभा द्वारा अपनाया गया था। 26 जनवरी 1950 को यह संविधान प्रभावी हुआ और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारत का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया।

भूगोल

मुख्य तथ्य

क्षेत्रफल = 32,87,263 वर्ग कि.मी.

अक्षांशीय विस्तार = 8 डिग्री 4 मिनिट उत्तरी अक्षांश से 37 डिग्री 6 मिनिट उत्तरी अक्षांश तक

India's Best Current Affairs Android App

देशंतारीय विस्तार = 68 डिग्री 7 मिनिट पूर्वी देशांतर से 95 डिग्री 25 मिनिट पूर्वी देशांतर तक

उत्तर से दक्षिण की लम्बाई = 3214 कि.मी.

पूर्व से पश्चिम की लम्बाई = 2933 कि.मी.

द्वीपों सहित तट की लम्बाई = 7516.5 कि.मी.

स्थलीय सीमा की लम्बाई = 15200 कि.मी.

- भारत का सबसे पूर्वी छोर अलोंग नगर (अरुणाचल प्रदेश) और पश्चिमी छोर द्वारका (गुजरात) है।
- भारत का सबसे दक्षिणी छोर अंदमान द्वीप में स्थित "इंदिरा पॉइंट " है।
- भारत का क्षेत्रफल संपूर्ण विश्व का 2.4% है और यह विश्व का 7वा सबसे बड़ा देश है।भारत-चीन सीमा (3917 कि.मी) से लगे राज्य (5)= जम्मू&कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
- भारत-पाकिस्तान सीमा (3310 कि.मी) से लगे राज्य (4)= जम्मू&कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात
- भारत-बांग्लादेश सीमा (4096 कि.मी) से लगे राज्य (5)= प.बंगाल, असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा
- सर्वाधिकलम्बी सीमा रेखा बांग्लादेश के साथ ही है।
- भारत-चीन कि बीच 1914 में शिमला सम्मलेन के आधार पर "मैकमोहन रेखा"का निर्धारण किया गया।
- हिमालय प्रदेश में स्थित भूटान कि प्रति रक्षा कि जिम्मेदारी एक विशेष संधि के द्वारा भारत पर है।
- भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।
- क्षेत्रफल के आधार पर भारत का सबसे बड़ा राज्य= राजस्थान
- क्षेत्रफल के आधार पर भारत का सबसे छोटा राज्य= गोवा
- जनसंख्या के आधार पर भारत का सबसे बड़ाराज्य = उत्तर प्रदेश
- जनसंख्या के आधार पर भारत कासबसे छोटा राज्य= सिक्किम
- कर्क रेखा भारत में 8 राज्यों से होकर गुजरती है - गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ ,झारखंड, प.बंगाल,त्रिपुरा, मिजोरम।
- भारत को उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जल वायुवाला प्रदेश कहते है।
- भारत में 80 % से भी अधिक वर्षा दक्षिणी पश्चिमी मानसून से होती है।
- अम्बाला शहर (पंजाब)गंगा और सिन्धु नदी का जल-विभाजक क्षेत्र है।
- भारत में सर्वाधिक 51 % भूमि कृषि हेतु है जबकि विश्व में मात्र 14 % है।
- भारत का प्रथम जल-विद्युत संयंत्र 1902 में शिव समुद्र जल प्रपात में कावेरी नदी पर प्रारंभ किया गया था।यह एशिया का भी प्रथम संयंत्र था।
- बंगलुरु भारत का प्रथम नगर है , जहाँ इलेक्ट्रिसिटीका उपयोग किया गया (1906)।
- सर्वाधिक जनसँख्या वाला नगर "मुंबई"है।
- भारत कि ओर से अंटार्कटिका में प्रथम वैज्ञानिक शोध दल 1981 में भेजा गया था।
- भारत का राष्ट्रपति देश का प्रधान होता है, जबकि प्रधानंत्री सरकार प्रमुख होता है और मंत्रि परिषद् की सहायता से शासन चलाता है जो मंत्रिमंडल मंत्रालय का गठन करते हैं।
- भारत की सबसे लम्बी नाहर "इंदिरा गाँधी नहर" है जो पंजाब से राजस्थान तक विस्तृत है ।
- सर्वाधिक जनसँख्या घनत्व वाला राज्यप.बंगाल है. उसके बाद केरल और बिहार है।

BankExamsToday.com

India's Best Current Affairs Android App

- भारत में सबसे पहले कम्प्युटराइज रिजर्वेशन दिल्ली में प्रारंभ किया गया था (1986)।
- भारत में सर्वाधिक समुद्रतटीय सीमा रेखा गुजरात (लगभग 1200 कि.मी.) है,तत्पश्चात आन्ध्र प्रदेश का स्थान आता है।
- भारत में उत्तर प्रदेश ऐसा राज्य है जिसकी सीमा सर्वाधिक राज्यों से मिलती है।

विश्व के महद्वीप

एशिया

एशिया महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। यह पश्चिम में यूरोप महाद्वीप से संलग्न है। एशिया 44,413,000 वर्ग किमी है। यह पूरे विश्व के भू-क्षेत्रका 29.72 प्रतिषत है। एशिया शब्द की उत्पत्ति हिब्रू भाषा के ''आसु'' से हुई है, जिसका अर्थ है, 'उदित सूर्य'। एशिया उत्तर में आर्कतिक सागर दक्षिण में हिन्द महासागर, पूर्वमें प्रषान्त महासागर तथा पश्चिम में यूराल पर्वत से घिरा है। एशिया महाद्वीप सर्वाधिक जलसंख्या वाला महाद्वीप है, यहाँ विश्व की लगभग 60% जनसंख्या निवास करती है। एशिया में विश्व का सबसे ऊंचा पर्वत माउण्ट एवरेस्ट (8852 किमी), सबसे ऊंचा पठार पामीर (5000 मी. औसत) जिसे विश्व की छत भी कहा जाता है, आदि हैं।एशिया में सर्वाधिक घना बसा हुआ द्वीप जावा है।

- **एशिया के प्रमुख बन्दरगाह:** कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, मनीला, बैंकाक, हाँगकाँग, सिंगापुर, याकोहामा, कोलम्बो, बसरा, शंघाई तथा एडन हैं।
- एशिया में विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश चीन तथा सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला देश मकाउ$ स्थित है।
- एशिया में क्षेत्रफल की दष्ष्टि से सबसे बड़ा देश चीन तथा सबसे छोटा देश मालद्वीव है।
- एशिया में सबसे लम्बी नदी यांगसी तथा अधिकतम गहराई म्रत सागर (396 मी) की है।
- एशिया में फिलीपीन्स द्वीप समूह के पास विश्व का सबसे गहरा महासागरीय गर्त प्रषान्त महासागर में मेरियाना गर्त (11,033 मी. गहरा) है।
- **एशिया में तीन प्रमुख प्रायद्वीप हैं:** (i) अबर का प्रायद्वीप (विश्वका सबसे बड़ा प्रायद्वीप, क्षेत्रफल 32,50,000 वर्ग किमी), (ii) दक्कन काप्रायद्वीप, (iii) इण्डोचीन का प्रायद्वीप।
- **एशिया के प्रमुख सागर:**बेरिंग सागर, जापान सागर, ओखोट्स्क सागर, लालसागर, कैस्पियन सागर, काला सागर, पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर, सुण्डा सागर तथा मारमारा सागर है।
- **एशिया महाद्वीप की प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ:**हिमालय, काराकोराम, अक्साई चीन, खिंगन, थ्यानासान और अल्टार्ड है।
- एशिया महाद्वीप में विश्व का सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्र मासिन राम (11,405 किमी) मेघालय, भारत मे हैं। एशिया में सबसे लम्बा रेल मार्ग ट्रान्स साइबेरियनरेल मार्ग (9438 किमी) है जो मास्को से नोखोद कता तक जाता है। इसके मार्ग में 97 स्टेशन पड़ते हैं। एशिया का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन पेइचिंग (चीन) में है।
- यह 5 लाख वर्ग मी. क्षेत्र में फ़ैला है।

BankExamsToday.com

India's Best Current Affairs Android App

- एशिया महाद्वीप के जैको बाद स्थान में स्थित बरखोंयान्स्क को पृथ्वी का शीतध्रुव कहा जाता है।
- विश्व की सबसे बड़ी झील (आन्तरिक सागर) वै$स्पियन सागर एशिया महाद्वीप मेंही स्थित है। एशिया में विश्व का सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित खारे पानी की झीलपैगांग झील (4,267 मी. ऊंचा) लद्दाख व तिब्बत में स्थित है।
- **एशिया महाद्वीप की प्रमुख खाड़ियाँ:**बंगाल की खाड़ी, कच्छ की खाड़ीफ्रांस की खाड़ी टोंगकिंग की खाड़ी एंव एडन की खाड़ी है।
- एशिया महाद्वीप में स्थित चीन विश्व का सर्वाधिक मछली पकड़ने वाला देश है।
- विश्व की सर्वाधिक प्राकृतिक रबड़ उत्पादित करने वाला देश इण्डोनेषिया है।
- विश्व की सबसे गहरी झील बैकाल झील (धरातल से 1940 मी. गहरा और समुद्र तल से 1485 मी. गहरा) एशिया में ही स्थित है।

अफ्रीका

अफ्रीका महाद्वीप विश्व का दूसरा विशाल तम महाद्वीप है। यह विषुवत रेखा के दोनों ओर फ़ैला हुआ है। इसका नाम अफ्रीका की एक बार्गबक जनजाति 'फरीदी' के नाम पर रखा गया है। इसका संपूर्ण क्षेत्रफल 30,244,049 वर्ग किमी है, जो विश्व के भू-क्षेत्र का 21 प्रतिषत है। इस महाद्वीप में 54 देश स्थित है।

BankExamsToday.com

- अफ्रीका, एशिया महाद्वीप से सूरज इस्थमस द्वारा जुड़ा हुआ तथा यूरोप से अलगहै। इसका समुद्र तट 30ए500 किमी लम्बा है।
- अफ्रीका के पूर्व में एशिया, लाल सागर और हिन्द महासागर, उत्तर में भूमध्य सागर और यूरोप तथा पश्चिम में एटलांटिक महासागर है।
- सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और औद्योगिक दष्ष्टि में अन्य महाद्वीपों मेंकाफी पिछड़ा होने के कारण अफ्रीका को काला/ अंध महाद्वीप कहा जाता है।
- अफ्रीका के पर्वतों में एटलस व ड्रेकन्सवर्ग प्रमुख है। यहाँ का ज्वाला मुखीपर्वत किलीमन्जारो है।
- अफ्रीका का आइवरी कोस्ट देश विश्व में सर्वाधिक कोको उत्पादक देश है।
- अफ्रीका में सर्वाधिक बाक्साइट उत्खनित करने वाला देश गिनी है, इसका विश्व में द्वितीय स्थान है।
- मिस्र में स्वेज नहर है जो लाल सागर को भूमध्य सागर से मिलाती है। इस नहर का निर्माण 1869 में किया गया जिससे यूरोप से भारत आने में 7000 किमी दूरी की बचत होती है।
- अफ्रीका में बुषमैन (कालाहारी), पिग्मी (कांगो बेसिन), बद्धस (सहारामरूस्थल) मिलने वाली प्रमुख आदिम जातियाँ हैं।
- विश्व का सर्वाधिक गर्म स्थल अल-अजीजीयाह (लीबिया) अफ्रीका में ही स्थितहै।
- विश्व की सबसे लम्बी नदी नील अफ्रीका महाद्वीप में ही बहती है।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

उत्तरी अमेरिका

उत्तरी अमेरिका विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है इसका क्षेत्रफल 2,424,700 वर्ग किमी है जो पृथ्वी के भू-क्षेत्र का 16.22 प्रतिषत है। इसका समुद्री तट सभी महाद्वीपों में सबसे बड़ा है, जिसकी लम्बाई 75,000 किमी है। इसका सबसे बड़ा प्रायद्वीप लेब्राडोर है तथा सबसे ऊंची पर्वत चोटी माउंट मे किनले (6194 मी) अलास्काश्रेणी में है। इस में कुल 29 देश स्थित है। इसका 'लारेन्षियत पठार' महादेश का सबसे पुराना हिस्सा है। नदियों में मिसीसिपी मिसोरी, सेंट लारेंस, मैकेजी आदि प्रमुखहै। उत्तरी अमेरिका की खोज 1492 ई. में कोलम्बस द्वारा की गई थी।

उत्तरी अमेरिका का नाम अमेरिका, अमेरिगो विस्पुच्ची नामक साहसी यात्री के नाम परपड़ा। उत्तरी अमेरिका की प्रमुख झीलें:

सुपीरियर, ईरी तथा मिशीगन इत्यदि है। पनामा नहर उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका को जोड़ती है। उत्तरी अमेरिका में रेड इंडियन और नीग्रो प्रमुख प्रजातियाँ हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण पूर्वी तट पर चलने वाले चक्रवात हरीकेन औरटारनेडी कहलाते हैं। उत्तरी अमेरिका के शीतोष्ण घास के मैदान 'प्रेयरीज' कहलातेहैं।

BankExamsToday.com

- पनामा नहर के दो प्रमुख बन्दरगाह कोलन और पनामा है। उत्तरी अमेरिका कान्यूयार्व$ (सं. स. अमेरिका) विश्व का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।
- उत्तरी अमेरिका के दो प्रमुख रेलमार्ग ;प्द्ध वै$नेडियन पैसिफिक रेलमार्ग ;प्प्द्धयूनियन पैसिफिक रेलमार्ग है। संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रमुख कार उद्योग काकेन्द्र डेट्रायट है।
- विश्व में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पादन करने वाला देश संयुक्त राज्य अमेरिकाहै।
- उत्तरी अमेरिका का मैक्सिको विश्व में सर्वाधिक चाँदी उत्खानित करने वाला देश है।
- उत्तरी अमेरिका के न्यूयार्व$ सिटी में ग्रांड सेण्ट्रल विश्व का सबसे बड़ा स्टेषन है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का सर्वाधिक मक्का उत्पादित करने वाला देश है।

दक्षिण अमेरिका

दक्षिण अमेरिका विश्व का चैथा बड़ा महाद्वीप है। इसका क्षेत्रफल 1,17,98,500 वर्ग किमी है तथा इसमें 15 देश स्थित हैं। दक्षिणी अमेरिका का बड़ा भाग दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। ऐसा माना जाता है कि क्रिस्टोफर कोलम्बस ने अपने तीसरे अभियान (1498-1500) में दक्षिण अमेरिका के ओरानिको नदी के मुहाने पर इसकी खोजकी। इसका समुद्र तट 28700 किमी लम्बा है। इसकी सबसे ऊंची चोटी माउंट एकांकागुआ (6959 मी) है। इसका नदी वितरण काफी घना है। यहाँ की अमेजन नदी विश्व की दूसरी सबसे लंबी नदी है। यहाँ की जल-वायु मुख्यतः उष्णकटिबंधीय तथा उपोष्ण प्रकार की है। वनस्पतियों में

India's Best Current Affairs Android App

चिरहरित वन, सबाना, लियानो, पम्पास, ग्रान चाकों और अन्य कई प्रकार की वनस्पतियाँ पायी जाती हैं। दक्षिणी अमेरिका के प्रमुख बंदरगाह में रियो-हि-जेनेरो, ब्युनस-आयर्स, सैण्टियागो, साओलुइस आदि है। दक्षिण अमेरिका के ब्राजील में बहने वाली अमेजन नदी विश्व में अपवाह क्षेत्र की दष्टि से प्रथम है। वेनेजुएला स्थित एंजेल प्रपात विश्व का सबसे ऊंचा झरना है।

- ब्राजील के कहवा के बागों को 'फजैण्डा' और उष्ण आर्द वन सेंकी 'सेल्वाज' कहते हैं।
- दक्षिण अमेरिका के चिली में इस महाद्वीप का षुष्कतम भाग वमरुस्थल 'अटाकामा' स्थित है।
- दक्षिण अमेरिका के अर्जेन्टाइना में विस्तष्त घास के मैदान को 'पम्पास' कहते हैं।
- दक्षिण अमेरिका के वनों से रबड़, सिनकोना, चन्दन, कार्नोब आदिवस्तुएँ प्राप्त होती है।
- दक्षिण अमेरिका में चिली-अर्जेन्टाइना सीमा पर विश्व की सबसेऊंचा ज्वालामुखी ओजेस-डेल-सलादो (6885 मी0) स्थित है।
- दक्षिण अमेरिका के बोलिविया राज्य की राजधानी लापाज विश्वकी सबसे अधिक ऊंचाई (समुद्रतल से 368 मी.) पर स्थित है।
- दक्षिण अमेरिका का सबसे बड़ा नगर रिसो-डि-जेतेरो (ब्राजील)है।

यूरोप

यूरोप एशिया महाद्वीप के पश्चिम भाग में उत्तरी गोलार्द्ध की उपोष्ण पट्टी में स्थित है। इसका नाम 'ऐरब' शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ होता है सूर्यास्त!यूरोप का क्षेत्रफल 10,527,000 वर्ग किमी है जो विश्व के भू-क्षेत्र का 7.04% है। क्षेत्रफल की दष्टि से यह पाँचवें स्थान पर है। यूरोप महाद्वीप का स्थल भाग एशिया से जुड़े रहने के कारण इन दोनों महाद्वीपों को 'यूरेषिया' का संज्ञा दी जाती है। इस महाद्वीप में 46 देश स्थित है। यूरोप को प्रायद्वीपों का देश भी कहा जाता है। यूरोपके प्रमुख पर्वत आल्पस, यूराल तथा ब्लैक फारेस्ट भ्रंषोत्थ पर्वत है। यहाँ कासर्वोच्च शिखर एलबुर्ज (5642 मी.) रूस मे स्थित है। यूरोप की प्रमुख नदियाँ डेन्यूब, बोल्गा, टेम्स, सीन आदि है। डेन्यूब नदी के तट पर बुडापेस्ट, बुखोरस्ट, बेलग्रेड तथाविएना बंदरगाह स्थित है।

BankExamsToday.com

- राइन नदी का जलमार्ग यूरोप का सर्वाधिक व्यस्त अन्तः स्थली जलमार्ग है।
- यूरोप के प्रमुख खनिज तेल उत्पादक देशों में फ्रांस, आस्ट्रिया रूमानिया, पोलैण्ड व हंगरी का स्थान है।
- यूरोप का सबसे महत्त्वपूर्ण ओरियण्ट रेलमार्ग है जो फ्रांस के पैरिस नगर सेटर्की के कुस्तुन्तुनिया नग र के मध्य तक जाता है।
- फ्रांस की राजधानी पेरिस जो सीन नदी के तट पर बसी है, विश्व का सबसे सुन्दरनगर माना जाता है। इसे फ़ैशन की नगरी भी कहा जाता है। यूरोप के हंगरी रूमानिया और यूक्रेन गणराज्य में शीतोष्ण घास के मैदान (प्रेयरी क्षेत्र) पाये जाते हैं।
- क्षेत्रफल की दष्टि से विश्व का सर्वाधिक बड़ा देश रूस यूरोप महाद्वीप में स्थित है।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

- काला सागर तथा भूमध्य सागर के तट पर स्थित यूगोस्लाविया, ग्रीस, रूमानियाऔर अल्बेनिया के सम्मिलित रूप को ही बाल्कन राज्य कहा जाता था।
- नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड व साइबेरिया क्षेत्र में विश्व के प्रमुख कोणभारी वन पाए जाते हैं।
- इटली विश्व का सर्वाधिक अंगूर उत्पादक देश है।

आस्ट्रेलिया

पृथ्वी का सबसे छोटा तथा सबसे कम जनसंख्या वाला महाद्वीप आस्ट्रेलिया है। इसका नाम 'आस्ट्रेलिस' से लिया गया है जिसका अर्थ दक्षिण होता है। आस्ट्रेलिया की खोज सर्वप्रथम पुर्तगाली अन्वेषक डब्लयू जान्स ने की थी। सर्वप्रथम 1788 में यहाँ ब्रिटिश उप निवेश की स्थापना हुई।आस्ट्रेलिया का सबसे ऊंचा जाग्रत ज्वाला मौना लौआ (4.168 मी.) है। यहाँ की सबसे बड़ी नदी मर्रे-डार्लिग (3490 किमी) है। आस्ट्रेलिया के 2/5 भाग की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र तथा 3/5 भाग उपोष्ण क्षेत्र में पड़ती है। आस्ट्रेलिया का क्षेत्रफल 76,86,880 वर्ग किमी है। आस्ट्रेलिया महाद्वीप में 16 देश स्थित है।

- आस्ट्रेलिया की खोज का श्रेय ऐबेल वस्मान (1642 मी.) और जेम्स कुक (1769 ई.) को जाता है। आस्ट्रेलिया के दक्षिणी-पूर्व में स्थित न्यूजीलैण्ड को ''दक्षिण का ब्रिटेन'' कहा जाता है।
- आस्ट्रेलिया के दक्षिण पूर्व में स्थित न्यूजीलैण्ड को ''दक्षिण का ब्रिटेन'' कहा जाता है।
- आस्ट्रेलिया की विश्व विख्यात सोने की खाने कालगूर्ली ओर कूलगाडी है।
- आस्ट्रेलिया विश्व प्रसिद्ध मैरिनो उ$न का प्रमुख उत्पादक है। यह विश्वमें सर्वाधिक ऊन निर्यातक देश भी है।
- आस्ट्रेलिया ओर न्यूगिनी के बीच टारेस जल सन्धि है। न्यूजीलैण्ड के मूल निवासियों को ''माओरी'' कहते हैं।
- आस्ट्रेलिया पूर्णतः दक्षिण गोलार्द्ध में स्थित है। मकर व्रत इसकेः मध्य से होकर गुजरती है। यह प्रषान्त तथा हिन्द महा सागर से घिरा हुआ है।
- आस्ट्रेलिया विश्व में सर्वाधिक बाक्साइट उत्खनित करने वाला देश है।
- न्यूजीलैण्ड में ऐमू और को काबरा नामक पक्षी पाए जाते हैं।

BankExamsToday.com

मरुस्थल

मरुस्थल पृथ्वी का बड़ा भू-भाग होता है l यह पृथ्वी के भू-भाग का 20% है l यह शुष्क, कम वर्षा वाले रेतीले, अत्यधिक तापमान और विरल वनस्पति वाले क्षेत्र होते है।

1) सहारा मरुस्थल (अफ्रीका)

2) अटाकामा मरुस्थल (चिली)

3) गोभी मरुस्थल (मैगनोलिया)

4) थार मरुस्थल (भारत)

India's Best Current Affairs Android App

पर्वत

यह पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक उठान (elevation) वाले क्षेत्र होते हैं l इन्हें पंक्ति बद्ध किया जा सकता है, जिसे श्रेणी के रूप में जाना जाता है l

द्वीप

द्वीप उप महाद्वीप की जमीन का वह टुकड़ा है जो चारों तरफ पानी से घिरा होता है l द्वीप मूल से ज्वालामुखी या प्रवाल चट्टान (coral reef) से बनते हैं।

महासागर

महासागर खारे पानी के प्रमुख निकाय है जो पृथ्वी की सतह का 71% भाग पर हैं।लहरें, ज्वार और समुद्र धाराओं समुद्र जल के तीन प्रमुख गति विधियां हैं। 5 प्रमुख महासागर हैं

1) प्रशांत महासागर

2) अटलांटिक महासागर

3) हिंद महासागर

4) आर्कटिक महासागर

5) दक्षिणी महासागर

1) प्रशांत महासागर - सबसे बड़ा महासागर है

मेरियाना गर्त

- पृथ्वी की गहरा भाग जोकि प्रशांत महासागर में स्थित है।
- यह वृत्ताकार आकृति में है l
- एशिया, ऑस्ट्रेलिया, उत्तर और दक्षिण अमेरिका इसके चारों ओर हैं।

2. अटलांटिक महासागर-दूसरा सबसे बड़ा महासागर है :

- यह अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर 'S' के आकार का है।
- इसके पश्चिम में उत्तर और दक्षिण अमेरिका और पूर्व में यूरोप और अफ्रीका है।

अटलांटिक की तटीय रेखा उबड-खाबड़ (indented) है और यह अनियमित और उबड-खाबड़ (indented) समुद्री तट बंदरगाहों के लिए आदर्श स्थान प्रदान करता है। इसलिए यह वाणिज्यिक दृष्टि से सबसे व्यस्त सागर है।

3. हिंद महासागर-यह एकमात्र सागर है जिसका नाम किस देश के नाम – भारत (हिंद) पर रखा गया है।

- इसकी आकृति त्रिभुजाकार है ।

यह उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका और पूर्व में ऑस्ट्रेलिया तक विस्तारित है।

4. दक्षिणी महासागर—पांच महासागरों में चौथा सबसे बड़ा महासागर दक्षिणी महासागर है।

दक्षिणी महासागर बड़ा दक्षिणी महासागर, अंटार्कटिक महासागर और दक्षिण ध्रुवीय महासागर के रूप में भी जाना जाता है।

5. आर्कटिक महासागर—यह उत्तर ध्रुवीय वृत के भीतर और उत्तर ध्रुव के चारों ओर स्थित है।

BankExamsToday.com

GK DIGEST UPDATED DAILY

India's Best Current Affairs Android App

- "प्रशांत महासागर के साथ उथले पानी की एक संकरे स्रोत से जुड़ा हुआ है जिसे बेरिंग जलडमरूमध्य 'के रूप में जाना जाता है।

- उत्तर अमेरिका और यूरेशिया के उत्तरी तटों से जुड़ा हुआ है।

अर्थव्यवस्था

प्रमुख शब्दावली

सी.आर.आर.(नकद आरक्षण अनुपात): सी.आर.आर. वह धन है जो बैंकों को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के पास गारंटी के रूप में रखना होता है.

बैंक दर : जिस दर पर रिजर्व बैंक वाणिज्यिक बैंकों को उधार देता है बैंक दर कहलाती है.

वैधानिक तरलता अनुपात (एस.एल.आर.): किसी आपात देन दारी को पूरा करने के लिए वाणिज्यिक बैंक अपने प्रतिदिन कारोबार नकद सोना और सरकारी प्रति भूतियों में निवेश के रूप में एक खास रकम रिजर्व बैंक के पास जमा कराते है जिस एस.एल.आर. कहते है..

रेपो रेट: रेपो दर वह है जिस दर पर बैंकों को कम अवधि के लिए रिजर्व बैंक से कर्ज मिलता है. रेपो रेट कम करने से बैंको को कर्ज मिलना आसान हो जाता है.

रिवर्स रेपो रेट: बैंकों को रिजर्व बैंक के पास अपना धन जमा करने के उपरांत जिस दर से ब्याज मिलता है वह रिवर्स रेपो रेट है..

लीड बैंक योजना :-जिलों कि अर्थ व्यवस्था को सुधारने के उद्देश्य से इस योजना का प्रारंभ १९६९ में किया गया. जिसके तहत प्रत्येक जिले में एक लीड बैंक होगा जो कि अन्य बैंकों कि सहायता के साथ साथ कार्य क्रमों के माध्यम से वित्तीय संस्थाओ के बीच समन्वय स्थापित करेगा.

निष्पादन बजट:-कार्यों के परिणामों या निष्पादन को आधार बनाकर निर्मित होने वाला बजट निष्पादन बजट है इसे कार्य पूर्ति बजट भी कहते है.

जीरोबेस बजट:-इस बजट में किसी विभाग या संगठन कि प्रस्तावित व्यय मांग के प्रत्येक मद को शुन्य मानते हुए पुन र्मूल्यांकन किया जाता है. भारत में इसे सर्व प्रथम "काउन्सिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (CISR)" में लागू किया गया और १९८७-८८ से सभी विभागों व मंत्रालयों में लागू हो गया.

आउटकम बजट :-इसके तहत प्रत्येक विभाग/ मंत्रालय के भौतिक लक्ष्यों को अल्प अवधि में निरीक्षण एवं मूल्यांकन के लिए रखा जाता है.

जेंडर बजट :-इस बजट के माध्यम से सरकार महिलाओं के कल्याण एवं सशक्तिकरण के लिए चलाये जा रहे कार्य क्रमों और योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु प्रतिवर्ष एक निश्चित राशि का प्रावधान बजट में करती है.

प्रत्यक्ष कर :-वह कर जिसमे कर स्थापित कर्ता (सरकार) और करदाता के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है. अर्थात जिसके ऊपर कर लगाया जा रहा है सीधे वही व्यक्ति भरता है.

अप्रत्यक्ष कर :-वह कर जिसमे कर स्थापित कर्ता (सरकार) और भुगतान कर्ता के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है अर्थात जिस व्यक्ति/संस्था पर कर लगाया जाता है उसे किसी अन्य तरीके से प्राप्त किया जाता है.

राजस्व घाटा :-सरकार को प्राप्त कुल राजस्व एवं सरकार द्वारा व्यय किये गए कुल राजस्व का अंतर ही राजस्व घाटा है.

राजकोषीय घाटा :-सरकार के लिए कुल प्राप्त राजस्व, अनुदान और गैर-पूंजीगत प्राप्तियों कि तुलना होने वाले कुल व्यय का अतिरेक है अर्थात आय(प्राप्तियों) के सन्दर्भ में व्यय कितना अधिक है.

BankExamsToday.com

GK DIGEST UPDATED DAILY

India's Best Current Affairs Android App

बॉण्ड अथवा डिबेंचर :-ऐसे ऋण पत्र होते है जिन्हें केंद्र सरकार, राज्य सरकार, अथवा कोई संसथान जारी करता है इन ऋण पत्रों पर एक निश्चित अवधि पर निश्चित दर से ब्याज प्राप्त होता है.
प्रतिभूति :-वित्तीय परिसंपत्तियों जैसे शेयर, डिबेंचर, व अन्य ऋण पत्रों के लिए संयुन्क्त रूप से प्रतिभूति शब्द का प्रयोग किया जाता है. बैंकिग में भी ऋणों कि जमानत के सन्दर्भ में प्रतिभूति शब्द का प्रयोग होता है.

भारतकी अर्थ व्यवस्थाविश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवें स्थान पर है, जन संख्या में इसका दूसरा स्थान है और केवल 2.4% क्षेत्रफल के साथ भारत विश्व की जन संख्या के 17% भागको शरण प्रदान करता है।

भारत में बहुत तेज आर्थिक प्रगति हुई है जब से उदारी करण और आर्थिक सुधार की नीति लागू की गयी है और भारत विश्व की एक आर्थिक महा शक्ति के रुप में उभर कर आया है। सुधारों से पूर्व मुख्य रुप से भारतीय उद्योगों और व्यापार पर सरकारी नियंत्रण का बोल बाला था और सुधार लागू करने से पूर्व इसका जोर दार विरोध भी हुआ परंतु आर्थिक सुधारों के अच्छे परिणाम सामने आनेसे विरोध काफी हद तक कम हुआ है। हलाकि मूलभूत ढाँचेमें तेज प्रगति न होने से एक बड़ा तबका अब भी ना खुश है और एक बड़ा हिस्सा इन सुधारों से अभी भी लाभान्वित नहीं हुये हैं।

राजव्यवस्था

BankExamsToday.com

भारतीय संविधान के रूप-रेखा

सन 1946 के कैबिनेट मिशन प्लान के अंतर्गत था, भारत में संविधान की रूप-रेखा बनाने के लिए संविधान सभा गठन किया गया । सविधान सभा का चुनाव अविभा जित भारत के लिए गिया गया और इसकी प्रथम बैठक का आयोजन 9 दिसम्बर 1946 को किया गया, जिसका 14 अगस्त 1947 को भारत डोमिनियन के लिए संप्रभु संविधान सभा के रूप में पुन: आयोजन किया गया । 3 जून,1947 की योजना के अंतर्गत विभाजन के परिणाम स्वरुप, पाकिस्तान के लिए अलग से सविधान सभा का गठन किया गया।
बंगाल, पंजाब, सिंध, उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत, बलूचिस्तान और असम के सिलहट जिला (जो, एक जनमत संग्रह द्वारा पाकिस्तान में शामिल हुए थे) के प्रतिनिधी भारत की संविधान सभा के सदस्यों के नहीं रह गए थे और नये प्रान्त पश्चिमी बंगाल और पूर्वी पंजाब (इसलिए, जब संविधान सभा अक्टूबर 31,1947 पुन: आयोजित की गयी) के सदस्यों के कम हो जाने के बाद सदन के सदस्य की संख्या 299 रह गयी।
26 नवम्बर, 1949 को सविधान सभा की बैठक में 299 में से 284 सदस्यों ने भाग लिए और अंत में उपस्थित सदस्यों के हस्ताक्षर करके संविधान को पारित किया।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

भारतीय संविधान सभा का गठन

भारत की संविधान सभा चयन के प्रांतीय विधान सभा (निचले सदन केवल) के सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से निर्वाचित की गयी।

इस योजना महत्व पूर्ण बिंदु इस प्रकार से थे :

(i) प्रांतों से 292 सदस्यों चुने गए; जबकि भारतीय राज्यों में अधिकतम 93 सीटों को आवंटित किया गया ।

(ii) प्रत्येक प्रांत में सीटों को उनकी जन संख्या के अनुपात में, तीन मुख्य समितियों मुस्लिम, सिख, और जनरल के बीच वितरित किया गया।

(iii) प्रांतीय विधान सभा में प्रत्येक समुदाय के सदस्य ने एकल संक्रमणीय मत के साथ आनुपातिक पद्धति के द्वारा अपने प्रतिनिधित्व का चुनाव किया।

(iv) भारतीय राज्यों के प्रतिनिधियों के मामले में चयन की विधि को नामांकन द्वारा निर्धारित किया गया था।

प्रारूप समिति के प्रावधानों में प्रत्येक अनुच्छेद विचार करने के लिए संविधान सभा की अगली बैठक नवम्बर 1948 में आयोजित की गयी। अनुच्छेद का दूसरा वाचन 17 अक्टूबर, 1949 को किया गया और जब संविधान पर सभापति ने हस्ताक्षर किये और उसे पारित किये जाने की घोषणा गयी, तब इसका तीसरा वाचन 26 नवम्बर, 1949 किया गया। संविधान के कुछ प्रावधानों - जोकि नागरिकता, चुनाव, अंतरिम संसद आदि से संबंधित उन्हें तुरंत प्रभाव से लागू कर किया गया जबकि शेष संविधान 26 जनवरी 1950 को अस्तित्व में आया क्यों कि कांग्रेस ने इस दिन 26 जनवरी को, 26 जनवरी,1930 से सवतंत्रता दिवस के रूप में माना रही थी। संविधान सभा ही पहली अस्थायी संसद बनी। प्रथम संसदीय चुनावों का आयोजन 1952।

BankExamsToday.com

संविधान का अंगीकरण

29 अगस्त,1947 को संविधान सभा ने डॉ. अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति की नियुक्ति की। इस समिति ने फरवरी 1948 को भारतीय संविधान का प्रारूप तैयार किया।

प्रारूप समिति के सदस्य

1. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर (अध्यक्ष)
2. एन. गोपाल स्वामी अय्यानगर
3. अल्लादी क्रिशाना स्वामी अय्यर
4. के.एम. मुन्सी
5. मोहम्मद, सालुदीन
6. बी.एल. मित्तर (बाद में इनके स्थान पर माधव राव को सम्मिलित किया गया)
7. डॉ. डी. पी. खेतान (इन्हें टी.टी. कृष्णमाचारी के मृत्यु के स्थान पर सम्मिलित किया गया)

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

महवपूर्ण तथ्य

1) भारत के संविधान की रूपरेखा संविधान सभा द्वारा तैयार की गयी जिसे कैबिनेट मिशन योजना (1946) के अंतर्गत स्थापित किया गया था।
2) स्वतंत्र भारत के लिए संविधान का प्रारूप तैयार करने के ऐतिहासिक कार्य को पूरा करने में संविधान सभा को लगभग 3 वर्ष (2 साल, 11 महीने और 18 दिन) का समय लगा।
3) इस अवधि के दौरान,165 दिनों में कुल 11 सत्रों आयोजन किया गया । इनमें से 114 दिनों संविधान का प्रारूप तैयार करने पर विचार और चर्चा पर व्यय किए गए।
4) डॉ. सचिदानंद सिन्हा संविधान सभा के प्रथम अध्यक्ष थे। उसके बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को इसका अध्यक्ष चुना गया जबकि डॉ. बी.आर अम्बेडकर को प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

राज्य के नीति निर्देशक तत्व

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 36 से 51 तक में निर्देश के रूप में ऐसे प्रावधान शामिल किये गए है जिन्हें राज्यों (केंद्र या राज्य सरकार) को पालन करना चाहिए और इनके पालन से भारत एक कल्याण कारी राज्य बन सकता है|

राज्य के नीति निर्देशक तत्व एक आदर्श प्रारूप हैं लेकिन सरकार इसका पालन ही करे, ऐसी बाध्यता नहीं है इस लिए इनके पालन न करने की स्थिति में न्यायालय में याचिका दायर नहीं की जा सकती है |

मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक तत्व में मुख्य अन्तर यह है की जहाँ मौलिक अधिकार व्यक्ति के लिए है तो वहीं नीति निर्देशक राज्य (सरकारों) के लिए है |

BankExamsToday.com

कुछ प्रमुख नीति निर्देशक तत्व निम्न है_

प्रारंभ के अनुच्छेदों में नीति निर्देशक तत्व को परिभाषित किया गया है

1) अनुच्छेद 38: राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनाएगा सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय को सुनिश्चित करते हुए भारत को लोक कल्याण की दिशा में अग्रसर करेगा।

2) अनुच्छेद 39 :राज्य अपनी नीतियों का सञ्चालन इस प्रकार करेगा जिससे पुरुष और स्त्री सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो |

3) अनुच्छेद 40 :राज्य ग्राम पंचायतों के गठन हेतु ऐसे कदम उठाएगा जिससे पंचायतो को स्वायत्त शासन की इकाई के रूप में कार्यक्षम बनाया जा सके |

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

4) अनुच्छेद 41 : -राज्य आर्थिक आर्थिक सामर्थ्य और विकास की सीमाओं के भीतर, काम पाने के, शिक्षा पाने के और बेरोजगारी, बुढ़ापा, बीमारी और निःशक्तता तथा अन्य अनर्ह अभाव की दशाओं में लोक सहायता पाने के अधिकार को प्राप्त कराने का प्रभावी उपबंध करेगा।

5) अनुच्छेद 42: राज्य विशेषतः महिलाओं के सम्बन्ध में काम की न्याय संगत और मानवोचित दशाओं का तथा प्रसूति सहायता का उपबंध करेगा |

6) अनुच्छेद 43: राज्य कर्मकारों के कार्यक्षेत्र की परिस्थिति, न्यूनतम मजदूरी व सुविधा के सम्बन्ध में अपेक्षित प्रावधान करेगा |

7) अनुच्छेद 44 : राज्य, भारत के समस्त राज्यक्षेत्र में सभी नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहिता बनाने का प्रयास करेगा।

8) अनुच्छेद 45 : राज्य, इस संविधान के प्रारंभ से दस वर्ष की अवधि के भीतर सभी बालकों को चौदह वर्ष की आयु पूरी करने तक, निःशुल्क और ओंनवार्य शिक्षा देने के लिए उपबंध करने का प्रयास करेगा ।
(४६वें संविधान द्वारा संशोधन के पश्चात् नया प्रावधान : -राज्य सभी बालकों के लिए छह वर्ष की आयु पूरी करने तक, प्रारंभिक बाल्यावस्था देख-रेख और शिक्षा देने के लिए उपबंध करने का प्रयास करेगा।)

9) अनुच्छेद 46 : राज्य, जनता के दुर्बल वर्गों (विशेषतः अनुसूचित जातियों और जनजातियों) के शिक्षा और अर्थ संबंधी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा और सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से उसकी संरक्षा करेगा ।

BankExamsToday.com

10) अनुच्छेद 47: राज्य, नागरिक के पोषणस्तर व जीवन स्तर की वृद्धि हेतु लोक स्वास्थ्य, औषधि निर्माण, नशामुक्ति के सम्बन्ध में आवश्यक प्रावधान करेगा |

11) अनुच्छेद 48: राज्य, देश के पर्यावरण के संरक्षण तथा संवर्धन का और वन तथा वन्य जीवों की रक्षा करने का प्रयास करेगा

12) अनुच्छेद 49: राज्य, राष्ट्रीय महत्व के संस्मारकों, स्थानों और वस्तुओं के संरक्षण हेतु विशेष प्रयास करेगा |

13) अनुच्छेद 50: राज्य की लोक सेवाओं में, न्यायपालिका को कार्य पालिका से पृथक् करने के लिए राज्य कदम उठाएगा ।

14) अनुच्छेद 51: अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि हेतु राज्य प्रयास करेगा |

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

भारत के सन्दर्भ में "राज्य के नीति निदेशक तत्व" का महत्व

- इन प्रावधानों के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों के लिए राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक न्याय को सुरक्षित किया जा सकता है |
- ये नागरिकों के अवसर व पद की समानता सुनिश्चित करते है |
- ये व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता, अखंडता को सुनिश्चित करते है |
- सरकार नैतिक रूप से बाध्य है (कानूनी रूप से नहीं) की वह कमजोर वर्ग के हित में कोई कदम उठाये |
- ये प्रावधान अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बढ़ावा देने में राष्ट्र की भूमिका सुनिश्चित करते है |

भारत का राष्ट्रपति

भारत के राष्ट्रपतिसंघ का कार्य पालक अध्यक्ष हैं। संघ के सभी कार्य पालक कार्य उनके नाम से किये जाते हैं। अनुच्छेद 52 के अनुसार संघ की कार्य पालक शक्ति उनमें निहित है। वह सशस्त्र सेनाओं का सर्वोच्च सेना नायक भी होता है। सभी प्रकार के आपात काल लगाने व हटाने वाला, युद्ध/शांति की घोषणा करने वाला होता है। वह देश का प्रथम नागरिक है। भारतीय राष्ट्रपति का भारतीय नागरिक होना आवश्यक है।

सिद्धांततः राष्ट्रपति के पास पर्याप्त शक्ति होती है। पर कुछ अपवादों के अलावा राष्ट्रपति के पद में निहित अधिकांश अधिकार वास्तव में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाले मंत्रि परिषद्के द्वारा उपयोग किए जाते हैं।

BankExamsToday.com

राष्ट्रपति पर महाभियोग

अनुच्छेद 61 राष्ट्रपति के महाभियोग से संबंधित है। भारतीय संविधान के अंतर्गत मात्र राष्ट्रपति महाभियोजित होता है, अन्य सभी पदाधिकारी पद सेहटाये जाते है। महाभियोजन एक विधायिका संबंधित कार्यवाही है जबकि पद सेहटाना एक कार्य पालिका संबंधित कार्यवाही है। महाभियोजन एक कडाई से पालितकिया जाने वाला औपचारिक कृत्य है जो संविधान का उल्लघंन करने पर ही होताहै। यह उल्लघंन एक राजनैतिक कृत्य है जिसका निर्धारण संसद करती है।

राष्ट्रपति की शक्तियाँ

संविधान का 72वाँ अनुच्छेद राष्ट्रपति को न्यायिक शक्तियाँ देता है कि वह दंड का उन्मूलन, क्षमा, आहरण, परिहरण, परिवर्तन कर सकता है।

India's Best Current Affairs Android App

- क्षमादान – किसी व्यक्ति को मिली संपूर्ण सजा तथा दोष सिद्धि औरउत्पन्न हुई निर्योज्ञताओं को समाप्त कर देना तथा उसे उस स्थिति मे रख देना मानो उसने कोई अपराध किया ही नही था। यह लाभ पूर्णतः अथवा अंशतः मिलता है तथा सजा देने के बाद अथवा उससे पहले भी मिल सकती है।
-
- लघुकरण – दंड की प्रकृति कठोर से हटा कर नम्र कर देना उदाहरणार्थ सश्रम कारावास को सामान्य कारावास में बदल देना
- परिहार – दंड की अवधि घटा देना परंतु उस की प्रकृति नही बदली जायेगी
- विराम – दंड मे कमी ला देना यह विशेष आधार पर मिलती है जैसे गर्भवती महिला की सजा मे कमी लाना
- प्रविलंबन – दंड प्रदान करने मे विलम्ब करना विशेष कर मृत्यु दंड के मामलॉ मे
- राष्ट्रपति संसद का अंग है। कोई भी बिल बिना उसकी स्वीकृति के पास नही हो सकता अथवा सदन मे ही नहीं लाया जा सकता है।

भारत का प्रधानमंत्री

भारत का प्रधानमंत्री भारत सरकार का मुखिया, भारत के राष्ट्रपति का मुख्य सलाहकार, मंत्रिपरिषद का मुखिया, तथालोकसभा में बहुमत वाले दलका नेता होता है। वह भारत सरकार के कार्य पालिका का नेतृत्व करता है।वह किसी भी धर्म या जाति का हो सकता है

भारतीय संविधानके अनुच्छेद 74 में स्पष्ट रूप से मंत्रि परिषद की अध्यक्षता तथा संचालन हेतु प्रधानमंत्री की उपस्थिति आवश्यक मानता है। उसकी मृत्यु या त्याग पत्रकी दशा मे समस्त परिषद को पद छोडना पडता है। वह अकेले ही मंत्री परिषद का गठन करता है। राष्ट्रपति मंत्रि गण की नियुक्ति उसकी सलाह से ही करते हैं।मंत्री गण के विभाग का निर्धारण भी वही करता है।

BankExamsToday.com

भारत का उच्चतम न्यायालय

भारत का उच्चतम न्यायालययया भारत का सर्वोच्च न्यायालय भारत का शीर्ष न्यायिक प्राधिकरण है जिसे भारतीय संविधान के भाग ५, अध्याय ४ के तहत स्थापित किया गया है। भारतीय संघ की अधिकतम औरव्यापक न्यायिक अधिकारिता उच्चतम न्यायालय को प्राप्त हैं। भारतीय संविधान के अनुसार उच्चतम न्यायालय की भूमिका संघीय न्यायालय और भारतीय संविधान के संरक्षक की है।

न्यायालय का गठन

28 जनवरी 1950, भारत के एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य बनने के दो दिनबाद, भारत का उच्चतम न्यायालय अस्तित्व में आया। उद्घाटन समारोह का आयोजन संसद भवन केनरेंद्र मण्डल(चेंबर ऑफ़ प्रिंसेज़) भवन में किया गया था। इससे पहले सन् 1937 से 1950 तकचैंबर ऑफ़ प्रिंसेसही भारत की संघीय अदालतका भवन था। आज़ादी के बाद भी सन् 1958 तक चैंबर ऑफ़ प्रिंसेस ही भारत के उच्चतम न्यायालय का भवन था, जब तक कि 1958 में उच्चतम न्यायालय ने अपने वर्तमान तिलक मार्ग, नई दिल्ली स्थित परिसर का अधिग्रहण किया।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति

संविधान में 30 न्यायधीश तथा 1 मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति का प्रावधान है। उच्चतम न्यायालय के सभी न्यायाधीशों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा उच्चतम न्यायालय के परामर्शानुसार की जाती है। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश इस प्रसंग में राष्ट्रपति को परामर्श देने से पूर्व अनिवार्य रूप से चार वरिष्ठतम न्यायाधीशों के समूह से परामर्श प्राप्त करतेहैं तथा इस समूह से प्राप्त परामर्श के आधार पर राष्ट्रपति को परामर्श देते हैं।

न्यायाधीशों की योग्यताएँ

- व्यक्ति भारत का नागरिक हो।
- कम से कम पांच साल के लिए उच्च न्यायालय का न्यायाधीश या दो या दो से अधिक न्यायालयों में लगातार कम से कम पांच वर्षों तक न्यायाधीश के रूप में कार्य कर चुका हो। अथवा
- किसी उच्च न्यायालय या न्यायालयों में लगातार दस वर्ष तक अधिवक्ता रह चुका हो। अथवा
- वह व्यक्ति राष्ट्रपति की राय में एक प्रतिष्ठित विधिवेत्ता होना चाहिए

सामान्य विज्ञान

BankExamsToday.com

विटामिन

विटामिन ऐसे रसायनिक योगिक होते हैं जो जन्तुओं के शरीर में विभिन्न उपापचय क्रियाओं के संचालन के लिए आवश्यक होते हैं। जीवों के शरीर में ये पर्याप्त मात्रा में नहीं बनते अतः इन्हें भोजन के साथ खाना पड़ता है। शरीर में पर्याप्त मात्रा में नहीं बन पाना इनकी प्रमुख विशेषता है। विभिन्न परिस्थितियों व विभिन्न जीवों के लिए विटामिन का अलग अर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए एस्कोर्बिक अम्ल कुछ जीवो के लिए विटामिन है अन्य के लिए नहीं। इसी तरह विटामिन डी,के तथा बायोटिन की आवश्यकता मानव शरीर को ही रहती है।

विटामिन की खोज होने से बहुत पहले ही लोगो को यह समझ आने लगा था कि विशेष प्रकार का भोजन करने पर विशेष प्रकार का विकार दूर हो जाता है। मिश्र वासियों ने यह जाना ही यकृत खिलाने पर रतौन्धी दूर हो जाती है। थाइमीन विटामिन 1910 में चावल की भूसी से खोजा गया। यह देखा गया कि लम्बे समय तक भूसी रहित चावल खाने वाले लोग बीमार हो जाते हैं।यह विचार आया कि चावल की भूसी में ऐसा कुछ होता है जो शरीर के लिए जरूरी होता है। खोज करने पर थाइमीन योगिक सामने आया।

प्रोटीन

प्रोटीन या प्रोभूजिनएक जटिल भूयातियुक्त कार्बनिक पदार्थ है जिसका गठन कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन एवंनाइट्रोजनतत्वों के अणुओं से मिलकर होता है। कुछ प्रोटीन में इन तत्वों के अतिरिक्त आंशिक रुप सेगंधक, जस्ता, ताँबा तथा फास्फोरसभी उपस्थित होता है। येजीवद्रव्य (प्रोटोप्लाज्म) के मुख्य अवयव हैं एवं शारीरिक वृद्धि

India's Best Current Affairs Android App

तथा विभिन्न जैविक क्रियाओं के लिए आवश्यक हैं। रासायनिक गठन के अनुसार प्रोटीन को सरल प्रोटीन, संयुक्त प्रोटीन तथा व्युत्पन्न प्रोटीन नामक तीन श्रेणियों में बांटा गया है। सरल प्रोटीन का गठन केवल अमीनो अम्ल द्वारा होता है एवं संयुक्त प्रोटीन के गठन में अमीनो अम्ल के साथ कुछ अन्य पदार्थों के अणु भी संयुक्त रहते हैं। व्युत्पन्न प्रोटीन वे प्रोटीन हैं जो सरल या संयुक्त प्रोटीन के विघटन से प्राप्त होते हैं। अमीनो अम्ल के पॉलीमराईजेशन से बनने वाले इस पदार्थ की अणु मात्रा 10,000 से अधिक होती है। प्राथमिक स्वरूप, द्वितीयक स्वरूप, तृतीयक स्वरूप और चतुष्क स्वरूप प्रोटीन के चार प्रमुख स्वरुप है।

महत्वपूर्ण वैज्ञानिक यंत्र

1) अल्टीमीटर : उंचाई सूचित करने हेतु वैज्ञानिक यंत्र
2) अमीटर : विद्युत् धारा मापन
3) अनेमोमीटर : वायुवेग का मापन
4) ऑडियोफोन : श्रवणशक्ति सुधारना
5) बाइनाक्युलर : दूरस्थ वस्तुओं को देखना
6) बैरोग्राफ : वायुमंडलीय दाब का मापन
7) क्रेस्कोग्राफ : पौधों की वृद्धि का अभिलेखन
8) क्रोनोमीटर : ठीक ठीक समय जान्ने हेतु जहाज में लगायी जाने वाली घड़ी
9) कार्डियोग्राफ : ह्रदयगति का मापन
10) कार्डियोग्राम : कार्डियोग्राफ का कार्य में सहयोगी
11) कैपिलर्स : कम्पास
12) डीपसर्किल : नतिकोण का मापन
13) डायनमो: यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत् उर्जा में बदलना
14) इपिडियास्कोप : फिल्मों का पर्दे पर प्रक्षेपण
15) फैदोमीटर : समुद्र की गहराई मापना
16) गल्वनोमीटर : अति अल्प विद्युत् धारा का मापन
17) गाड्गरमुलर : परमाणु कण की उपस्थिति व् जानकारी लेने हेतु
18) मैनोमीटर : गैस का घनत्व नापना
19) माइक्रोटोम्स : किसी वस्तु का अनुवीक्षनीय परिक्षण हेतु छोटे भागों में विभाजित करता है।
20) ओडोमीटर : कार द्वारा तय की गयी दूरी बताता है।
21) पेरिस्कोप : जल के भीतर से बाहरी वस्तुएं देखि जाती हैं।
22) फोटोमीटर : प्रकाश दीप्ति का मापन
23) पाइरोमीटर : अत्यंत उच्च ताप का मापन
24) रेडियोमीटर : विकिरण द्वारा विकरित उर्जा का मापन
25) सीज्मोमीटर : भूकंप की तीव्रता का मापन

BankExamsToday.com

India's Best Current Affairs Android App

26) सेक्सटेंट : ग्रहों की उंचाई जानने हेतु
27) ट्रांसफॉर्मर : प्रत्यावर्ती धारा की वोल्टता में परिवर्तन करने हेतु
28) टेलीप्रिंटर : टेलीग्राफ द्वारा भेजी गयी सूचनाओं को स्वतः छापने वाला यंत्र
29) टैक्सीमीटर : टैक्सीयों में किराया दर्शाने वाला यंत्र
30) टैकोमीटर : मोटरबोट व् वायुयान का वेगमापक
31) टेलीस्कोप : दूरस्थ वस्तुओं को देखने में सहायक यंत्र
32) जाइरोस्कोप : घूमती वस्तु की गतिकी का अध्ययन
33) ग्रेवीमीटर : जल में उपस्थित तेल क्षेत्रों का पता लगाना
34) ग्रामोफोन : रिकार्ड पर उपस्थित ध्वनि को पुनः सुनाने वाला यंत्र
35) कायमोग्राफ : रक्तदाब, धडकन का अध्ययन
36) कायनेस्कोप: टेलीविजन स्क्रीन के रूप में
37) कैलिपर्स : छोटी दूरियां मापने वाला यंत्र
38) कैलोरीमीटर : ऊष्मामापन का कार्य
39) कार्ब्युरेटर : इंजन में पेट्रोल का एक निश्चित भाग वायु में भेजने वाला यंत्र
40) कम्पास : दिशा ज्ञान हेतु प्रयुक्त
41) कम्प्यूटेटर : विद्युत्धारा की दिशा बताने वाला यंत्र
42) एपिकायस्कोप : अपारदर्शी चित्रों को पर्दे पर दिखाना
43) एपिडोस्कोप : सिनेमा में पर्दे पर चित्रों को दिखाना

BankExamsToday.com

44) एस्केलेटर : चलती हुई यांत्रिक सीढियां
45) एक्सियरोमीटर : वायुयान का वेगमापक
46) एक्टियोमीटर : सूर्य किरणों की तीव्रता मापने का यंत्र
47) एयरोमीटर : गैसों का भार व् घनत्व मापक
48) एक्युमुलेटर : विद्युत् उर्जा संग्राहक
49) ओसिलोग्राफ : विद्युत् अथवा यांत्रिक कम्पन सूचित करने हेतु
50) स्टेथोस्कोप : हृदय व् फेफड़े की गति के अध्ययन हेतु
51) स्फिग्नोमैनोमीटर : धमनियों में रक्तदाब की तीव्रता ज्ञात करना।।
52) जीटा : शून्य उर्जाताप नाभिकीय संयोजन
53) डेनियल सेल : परिपथ में विद्युत् उर्जा प्रवाहित करने हेतु
54) डिक्टाफोन : बातचीत रिकार्ड करके पुनः सुनाने वाला यंत्र
55) डायलिसिस : गुर्दे खराब होने पर रक्त शोधन हेतु
56) थर्मामीटर : ताप मापन हेतु
57) थर्मोस्टेट : ताप स्थाई बनाये रखने हेतु

India's Best Current Affairs Android App

58) हिप्सोमीटर : समुद्र तल से उंचाई ज्ञात करने हेतु
59) हाइड्रोफोन : पानी के भीतर ध्वनि अंकित करना
60) स्पेक्ट्रोमीटर :प्रकाश का अपवर्तनांक ज्ञात करना
61) हाइड्रोमीटर : द्रवों की आपेक्षिक आर्द्रता ज्ञात करना
62) हाइग्रोमीटर : वायु की आपेक्षिक आर्द्रता ज्ञात करना
63) स्टीरियोस्कोप : फोटो को पर्दे पर त्रिविमीय रूप में दिखाना
64) वानडीग्राफ जनरेटर : उच्च विभवान्तर उत्पन्न करना
65) वोल्टामीटर : विभवान्तर मापना
66) लैक्टोमीटर : दूध की शुद्धता मापना
67) रिफ्रैक्टोमीटर : माध्यमों के अपवर्तनांक ज्ञात करना।
68) रेन गेज : वर्षा की मात्रा का मापन
69) रेडिएटर : वाहनों के इंजन को ठंडा रखना
70) रेफ्रिजरेटर ;:: विशेषतः खाद्य पदार्थों को ठंडा रखना
71) राडार : वायुयान की स्थिति ज्ञात करना
72) माइक्रोमीटर : अति लघु दूरियां नापना
73) मेगाफोन : ध्वनि को दूरस्थ स्थानों पर ले जाना
74) बैटरी : विद्युत् उर्जा का संग्रहण
75) बैरोमीटर : वायुदाब का मापन

BankExamsToday.com

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

बर्फ़ में स्केटिंग करना प्रदर्शित करता है कि, दाब बढ़ाने पर बर्फ़ का गलनांक : घट जाता है
स्टेनलेस स्टील एक मिश्र धातु है, जब कि वायु है एक : मिश्रण
पर्यावरण का अध्ययन जीव- विज्ञान की किस शाखा के अंतर्गत किया जाता है? :पारिस्थिति की
फूलों के संवर्द्धन के विज्ञान को क्या कहते हैं? :फ़्लोरी कल्चर
किसी असंतुलित बल द्वारा किसी पिण्ड में उत्पन्न त्वरण : बल के अनुक्रमानुपाती होता है।
निम्नलिखित में से कौन एक अस्थायी कण है : न्यूट्रॉन

परमाणु नाभिक के अवयव हैं : प्रोटॉन और न्यूट्रॉन

सजावटी वृक्ष तथा झाड़ियों के संवर्द्धन से सम्बन्धित अध्ययन कहलाता है : आरबोरीकल्चर

निकट दृष्टिदोष से पीड़ित व्यक्ति के चश्मे में कौन-सा लेंस प्रयोग किया जाता है? :अवतल लेंस
दूर दृष्टिदोष से पीड़ित व्यक्ति के चश्मे में कौन-सा लेंस प्रयोग किया जाता है? : उत्तल लेंस
न्यूटन के गति के तीसरे नियम के अनुसार क्रिया तथा प्रतिक्रिया से सम्बद्ध बल : हमेशा भिन्न-भिन्न वस्तुओं पर ही लगे होने चाहिए।

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

'प्रत्येक क्रिया के बराबर व विपरीत दिशा में एक प्रतिक्रिया होती है।' यह है : न्यूटन का गति विषयक तृतीय नियम

माइकोलॉजी में किसका अध्ययन किया जाता है? :कवक

जल में तैरना न्यूटन की गति के किस नियम के कारण सम्भव है? :तृतीय नियम

'कोई पिण्ड तब तक विरामावस्था में ही बना रहेगा, जब तक उस पर कोई बाह्य बल कार्य नहीं करता है।' यह कथन किसका है?:न्यूटन

न्यूक्लिऑन नाम सामान्यत: किसके लिये हैं? :प्रोटॉन और न्यूट्रॉन

पोजिट्रॉन है एक : धनावेशित इलेक्ट्रॉन

एग्रोफ़ोरेस्ट्री क्या है? :कृषि के साथ-साथ उसी भूमि पर काष्ठीय बारहमासी वृक्ष लगाना

एक्सो-बायोलॉजी (Exo-biology) में निम्नलिखित में से किसका अध्ययन किया जाता है? :बाह्य ग्रहों तथा अंतरिक्ष में जीवन का

मोनाजाइट किसका अयस्क है? : थोरियम

बॉक्साइट निम्नलिखित में से किसका प्रमुख अयस्क है? :ऐलुमिनियम

कार्नेलाइट किसका खनिज है? : मैग्नीशियम

'गन मेटल' किसका अयस्क है?:तांबा, टिन और ज़िंक

लहसुन की अभिलाक्षणिक गंध का कारण है? :सल्फर यौगिक

जल में आसानी से घुलनशील है? : नाइट्रोजन

भारी जल एक प्रकार का है? :मंदक

BankExamsToday.com

इनमें से कौन कोलॉइड नहीं है? :रक्त

पनीर, निम्न का एक उदाहरण है? :जैल

माचिस की तीली के एक सिरे पर लगा मसाला निम्नलिखित का मिश्रण है? :लाल फॉस्फोरस और गंधक

निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रकृति में अनुचुम्बकीय है? :ऑक्सीजन

जो तत्त्व ऑक्सीजन पर प्रतिक्रिया नहीं करता है, वह है? :आयोडीन

निम्न में से कौन सर्वाधिक स्थायी तत्त्व है? :सीसा

निम्नलिखित में से क्या जल से हल्का होता है? :सोडियम

सामान्य ट्यूबलाइट में कौन सी गैस होती है? :आर्गन के साथ मरकरी वेपर

वैज्ञानिक 'एडबर्ड जेनर' निम्नलिखित में से किस रोग से सम्बन्धित हैं : चेचक

मानव में गुर्दे का रोग किसके प्रदूषण से होता है? :कैडमियम (Cd)

बी.सी.जी. का टीका निम्न में से किस बीमारी से बचाव के लिए लगाया जाता है? :क्षय रोग

प्रकाश संश्लेषण के दौरान पैदा होने वाली ऑक्सीजन का स्रोत क्या है? :जल

पौधे का कौन-सा भाग श्वसन क्रिया करता है? :पत्ती

कच्चे फलों को कृत्रिम रूप से पकाने के लिए किस गैस का प्रयोग किया जाता है? : एसिटिलीन

वृक्षों की आयु किस प्रकार निर्धारित की जाती है? :वार्षिक वलयों की संख्या के आधार पर

नेत्रदान में दाता की आँख का कौन-सा भाग उपयोग में लाया जाता है? :रेटिना

GK DIGEST UPDATED DAILY

India's Best Current Affairs Android App

साधारण मानव में गुणसूत्रों की संख्या कितनी होती है? : 46
मानव शरीर के किस अंग की हड्डी सबसे लम्बी होती है? :ऊरु (जांघ)
गाय और भैंस के थनों में दूध उतारने के लिए किस हार्मोन की सुई लगाई जाती है? : ऑक्सीटोसिन
परखनली शिशु के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सत्य है? :शिशु का परिवर्धन परखनली के अन्दर होता है।
मानव शरीर में पसलियों के कितने जोड़े होते हैं? : 12
किस द्रव के एकत्रित होने पर माँसपेशियाँ थकान का अनुभव करने लगती हैं? : लैक्टिक एसिड
स्तन धारियों में लाल रुधिर कणिकाओं का निर्माण कहाँ होता है? :अस्थिमज्जा में
वाशिंग मशीन का कार्य किस सिद्धांत पर आधारित है? :अपकेंद्रण
न्यून तापमानों (क्रायोजेनिक्स) का अनु प्रयोग होता है? :अंतरिक्ष यात्रा, चुम्बकीय प्रोत्थापन एवं दूरमिति में
द्रव बूँद की संकुचित होकर न्यूनतम क्षेत्र घेरने की प्रवृत्ति का कारण होता है? :पृष्ठ तनाव
निम्नलिखित में से कौन-सी एक सदिश राशि है? : --संवेग
जब किसी झील की तली से उठकर वायु का बुलबुला ऊपरी सतह तक आएगा तो उसका आकार? :बढ़ जाएगा
अल्फा कण के दो धन आवेश होते हैं, इसका द्रव्यमान लगभग बराबर होता है : -310
केल्विन मात्रक में मानव शरीर का सामान्य तापमान है : -हीलियम के एक परमाणु के
निम्नतापी इंजनों का अनु प्रयोग होता है? :रॉकेट प्रौद्योगिकी में
निर्वात में प्रकाश की चाल होती है? : 3 X 108 मीटर / सेकण्ड
निम्न में सदिश राशि कौन-सी है? :वेग
BankExamsToday.com
एक परिशुद्ध घड़ी 3:00 बजे का समय दर्शा रही है। घण्टे की सूई के 135 डिग्री घूमने के बाद क्या समय होगा? : 7 बजकर 30 मिनट
एक खगोलीय मात्रक की औसत दूरी है? :पृथ्वी और सूर्य के बीच की
निम्नलिखित में से किसने न्यूटन से पूर्व ही बता दिया था, कि सभी वस्तुएँ पृथ्वी की ओर गुरुत्वाकर्षित होती हैं? :आर्यभट्ट
जेट इंजन किस सिद्धांत पर कार्य करता है? :रैखिक संवेग संरक्षण
साइकिल चालक को प्रारम्भ में अधिक बल क्यों लगाना पड़ता है?. :चालक जड़त्व पर विजय पाने के लिए अधिक बल लगाता है।
जीव विज्ञान' (Biology) शब्द का प्रयोग सर्व प्रथम किसने किया था? :लैमार्क एवं ट्रैविरेनस ने
'वनस्पति विज्ञान' के जनक कौन हैं?: थियोफ्रेस्टस
'चिकित्सा शास्त्र' का जनक किसे माना जाता है?:हिप्पोक्रेट्स
पुष्पों के अध्ययन को क्या कहा जाता है? :एन्थोलॉजी
वन अनुसंधान संस्थान कहाँ स्थित है? : देहरादून
'भारतीय वानस्पतिक सर्वेक्षण' का मुख्यालय कहाँ स्थित है?:कोलकाता
निम्न में से किसे 'वर्गिकी का पितामह' कहा जाता है? :कार्ल वार्न लीनियस
वर्गीकरण की आधारीय इकाई क्या है? :स्पेशीज

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App

जीवाणु की खोज सर्व प्रथम किसने की थी? :ल्यूवेन हॉक
वास्तविक केन्द्रक किसमें अनुपस्थित होता है? :जीवाणुओं में
भोजन की विषाक्तता उत्पन्न होती है? :क्लोस्ट्रीडियम बौटूलीनम द्वारा
नाइट्रोजन के स्थिरीकरण में निम्न में से कौन-सी फ़सल सहायक है? :फली (बीन्स)
निम्नलिखित में से कौन-सी बीमारी जीवाणुओं के द्वारा होती है? :कुष्ठ
सूक्ष्म जीवाणुओं युक्त पदार्थ का शीतिकरण एक प्रक्रिया है, जिसका कार्य है -- -जीवाणुओं को निष्क्रिय करना
दूध के दही के रूप में जमने का कारण है : - लैक्टोबैसिलस
वृक्षों की छालों पर उगने वाले कवकों को क्या कहते हैं? :कार्टीकोल्स
निम्नलिखित में से कौन खुजली के रोग 'स्केबीज' का कारण है? : कवक
लाइकेन किन दो वर्ग के पोधों से मिलकर बने होते हैं? : कवक और शैवाल
लाइकेन किसके सूचक होते हैं? :वायु प्रदूषण के
जड़ के स्थान पर 'मूलाभास' किसमें पाया जाता है? :ब्रायोफाइट्स में
सबसे अधिक क्रोमोसोम किसमें पाए जाते हैं? :टेरिडोफाइट्स में
निम्न में से कौन-सा एक 'जीवित जीवाश्म' है?--साइकस
श्वसन मूल किस पौधे में पाई जाती हैं? : जूसिया में
'साबूदाना' किससे प्राप्त होता है?: साइकस से
निम्नलिखित में से कौन एक जड़ नहीं है? :आलू
BankExamsToday.com
स्तम्भ मूल होती हैं : -अपस्थानिक जड़ें
जड़ें किस भाग से विकसित होती हैं? : मूलांकुर से
गाजर एक प्रकार से क्या है? :जड़
हल्दी के पौधे का खाने योग्य हिस्सा कौन-सा होता है? :प्रकन्द
प्याज किसका परिवर्तित रूप है?--तने का-
घरों में विद्युत की पूर्ति 220 वोल्ट पर की जाती है। 220 वोल्ट प्रदर्शित करता है? : औसत वोल्टेज
परमाणु के नाभिक में होते हैं? :प्रोटॉन व न्यूट्रॉन
एम्पियर किसका मात्रक है? :विद्युत धारा का
शरीर रचना के किस वर्गीकरण में लॉबस्टर सम्बद्ध होता है? :क्रस्टेशियन्स
कौन से पौधों में नाइट्रोजन स्थायीकरण की क्षमता होती है? :चना एवं अन्य दलहन
विद्युत परिपथ में फ़्यूज का क्या कार्य होता है? :विद्युत परिपथ की रक्षा करता है

GK DIGEST UPDATED DAILY
India's Best Current Affairs Android App